

# संगीत सेतु

भारत और पश्चिमी संगीत का तुलनात्मक अध्ययन

आचार्य बृजेश चतुर्वेदी



*Harita Music Academy®*  
**Let's Learn Music**



BlueRose ONE<sup>EE</sup>  
Stories Matter

New Delhi • London

## BLUEROSE PUBLISHERS

India | U.K.

Copyright © Acharya Brijesh Chaturvedi 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.



BlueRoseONE<sup>®</sup>  
Stories Matter  
New Delhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication,  
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS  
[www.BlueRoseONE.com](http://www.BlueRoseONE.com)  
[info@bluerosepublishers.com](mailto:info@bluerosepublishers.com)  
+91 8882 898 898  
+4407342408967

ISBN: 978-93-7018-112-0

Cover Design: Shubham Verma  
Typesetting: Sagar

First Edition: June 2025

# आदर समर्पण

---

मैं इस पुस्तक को उन सभी संगीत साधकों, विद्यार्थियों और शोधार्थियों को समर्पित करता हूँ, जो भारतीय संगीत की गहराइयों को समझने और आगे बढ़ाने के लिए समर्पित हैं। भारतीय संगीत केवल सुर और ताल का संगम नहीं, बल्कि एक साधना है, जो आत्मा को ईश्वर से जोड़ने का माध्यम बनती है। यह पुस्तक उन सभी जिज्ञासु मनो के लिए एक विनम्र भेंट है, जो संगीत को केवल कला नहीं, बल्कि आत्मबोध का एक पथ मानते हैं। आशा करता हूँ कि यह ग्रंथ उनके मार्ग को आलोकित करने में सहायक होगा।

# भूमिका

---

**"संगीत सेतु: भारत और पश्चिमी संगीत का तुलनात्मक अध्ययन"**

संगीत केवल ध्वनि नहीं, यह आत्मा की भाषा है। यह भावनाओं की वह अभिव्यक्ति है, जो न केवल हमारे हृदय को स्पर्श करती है, बल्कि हमारी संस्कृति और परंपरा का दर्पण भी है। **भारतीय और पश्चिमी शास्त्रीय संगीत** दो ऐसी विशिष्ट प्रणालियाँ हैं, जिन्होंने अपने-अपने आयामों में संगीत को उत्कृष्टता प्रदान की है। यह ग्रंथ इन दोनों महान परंपराओं की तुलना कर उनके बीच की गूढ़ समानताओं और विशिष्ट भिन्नताओं को उजागर करता है।

*रागस्य स्रोतः हृदयं नरेषु तालस्य मूलं चरणेषु नृत्यम्।*

*गीतस्य भावो भवबन्धनाशः संगीतमेतत् परमं सुखाय॥*

**अर्थ:** राग का स्रोत मनुष्य का हृदय है, ताल का मूल नृत्य में है। गीत का भाव बंधनों को मिटाने वाला है, और यह संगीतमय साधना परम आनंद का मार्ग है।

भारतीय संगीत राग, ताल और भाव की गहरी अनुभूति पर केंद्रित है, जो आत्मा को आध्यात्मिक ऊँचाइयों तक ले जाता है। वहीं, पश्चिमी संगीत हार्मनी, स्केल और संरचित रचनाओं पर आधारित है, जो एक सुव्यवस्थित प्रणाली का अनुसरण करता है। इस पुस्तक में हमने तुलनात्मक दृष्टि से दोनों परंपराओं के स्वरूप, प्रभाव और वैश्विक योगदान का विश्लेषण किया है।



नादः स्वरूपं जगतः प्रकाशः संगीतमेतत् सुखदं जनानाम्।

यस्य प्रवाहे सततं लयोऽस्ति स स्यादनेकस्य हृदन्तरात्मा॥

अर्थः नाद इस जगत का प्रकाश है, संगीत लोगों के लिए सुखदायक है। जिसमें लय की सतत प्रवाहिता है, वह अनेक हृदयों में आत्मा के समान व्याप्त रहता है।

इस ग्रंथ का उद्देश्य संगीत को केवल एक शास्त्रीय अध्ययन के रूप में प्रस्तुत करना नहीं, बल्कि उसे एक जीवंत अनुभूति के रूप में देखना है। यह पुस्तक उन सभी पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक होगी, जो संगीत को केवल सुनना ही नहीं, बल्कि उसे आत्मसात करना चाहते हैं। आशा है कि यह प्रयास संगीत प्रेमियों को एक नई दृष्टि प्रदान करेगा और दोनों संगीत परंपराओं के बीच "संगीत सेतु" का कार्य करेगा।

(लेखक: आचार्य ब्रजेश चतुर्वेदी)



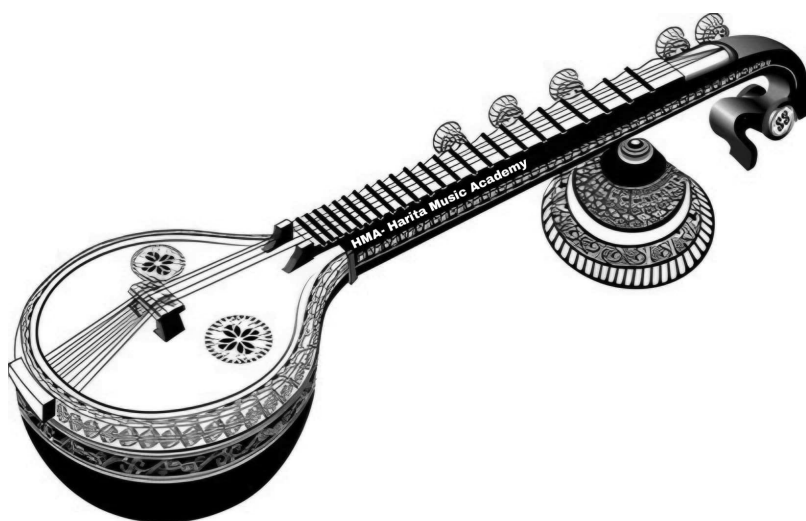
# अनुक्रमणिका

---

|                                                                                |     |
|--------------------------------------------------------------------------------|-----|
| 1. हिंदुस्तानी संगीत प्रकार और उनके महत्व का अध्ययन.....                       | 2   |
| 2. भारतीय और पश्चिमी शास्त्रीय संगीत: एक विवेचना .....                         | 25  |
| 3. भारतीय शास्त्रीय संगीत: एक अद्वितीय धारणा .....                             | 39  |
| 4. पश्चिमी संगीत .....                                                         | 54  |
| 5. अध्याय: स्टाफ नोटेशन की मूल बातें .....                                     | 70  |
| 6. स्टाफ नोटेशन में अभिव्यक्ति और गतिशीलता<br>(Dynamics & Expression) .....    | 77  |
| 7. भारतीय शास्त्रीय संगीत और पाश्चात्य शास्त्रीय संगीत: एक<br>गहन अध्ययन ..... | 108 |
| समापन: भारतीय शास्त्रीय संगीत— एक सनातन धरोहर .....                            | 114 |
| भारतीय संगीत अमर है— और इसे अमर बनाए रखना<br>हमारा कर्तव्य है! .....           | 119 |







# 1.

## हिंदुस्तानी संगीत प्रकार और उनके महत्व का अध्ययन

---

भारतीय संस्कृति के अमूल्य धरोहर में हिंदुस्तानी संगीत का महत्वपूर्ण स्थान है। इस संगीत का विकास अनेक शैलियों, परंपराओं और संगीतिक प्रणालियों के द्वारा हुआ है, जो भारतीय संस्कृति की विविधता और गहराई को प्रकट करता है। इस लेख में हम हिंदुस्तानी संगीत के प्रमुख शैलियों और उनके विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित करेंगे।

भारतीय शास्त्रीय संगीत का इतिहास अत्यंत प्राचीन और समृद्ध है। ध्रुपद के उदय से पूर्व कई संगीत शैलियाँ प्रचलित थीं, जो वेदों, धार्मिक अनुष्ठानों, दरबारी संगीत, और लोक परंपराओं से विकसित हुई थीं। ये शैलियाँ धीरे-धीरे परिष्कृत होती गईं और ध्रुपद जैसी जटिल गायन विधाओं का आधार बनीं। निम्नलिखित प्रमुख गायन शैलियाँ ध्रुपद से पहले गाई जाती थीं:

### 1. सामगान

सामगान भारतीय संगीत की सबसे प्राचीन विधा है, जिसका उल्लेख वेदों में मिलता है। यह गायन शैली विशेष रूप से सामवेद से संबंधित है और धार्मिक अनुष्ठानों, यज्ञों तथा वेद-पाठ में प्रयुक्त होती थी।

विशेषताएँ:

यह वेदों के मंत्रों का संगीतबद्ध उच्चारण था।

इसमें सात स्वरों का उपयोग किया जाता था, लेकिन मेलोडी और लयबद्धता अत्यंत सीमित थी।

इसे मंदिरों और यज्ञशालाओं में ऋषि-मुनियों द्वारा गाया जाता था।

यह गायन शैली केवल आध्यात्मिक और धार्मिक उद्देश्यों तक सीमित थी।

सामगान को ही भारतीय शास्त्रीय संगीत का आदि स्रोत माना जाता है, जिसने आगे चलकर मार्गी और देशी संगीत को जन्म दिया।

**रचनाकार: आचार्य ब्रजेश चतुर्वेदी**

## श्लोक 1

सप्तस्वरैः सुसंयुक्तं, यज्ञवेदीषु कीर्तितम्।

ऋषिभिः संप्रवर्त्यं च, सामगानं सनातनम्॥

**अर्थ:** सामगान सप्त स्वरों से युक्त एक प्राचीन संगीत प्रणाली है, जिसे यज्ञों में गाया जाता था। यह ऋषियों द्वारा प्रवर्तित हुआ और सनातन धर्म का अभिन्न अंग बना।

## श्लोक 2

स्वरैः संयुक्तमुद्गीतं, वेदमन्त्रैः सुसंयुतम्।

यज्ञकर्मसु मुख्यं तत्, सामगानं सनातनम्॥



**अर्थ:** सामगान वह संगीत प्रणाली है, जिसमें स्वर और वेद मंत्रों का संयोग होता है। यह विशेष रूप से यज्ञों में गाया जाता था और धार्मिक अनुष्ठानों में इसका महत्वपूर्ण स्थान था।

## 2. गान्धर्व संगीत

गान्धर्व संगीत ध्रुपद के पूर्व का एक परिष्कृत संगीत रूप था, जिसे प्राचीन भारतीय नाट्य और दरबारी संगीत का मूल आधार माना जाता है। यह भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में विस्तृत रूप से वर्णित है।

विशेषताएँ:

- यह मार्गी संगीत की श्रेणी में आता था, जिसका प्रयोग धार्मिक अनुष्ठानों और नाटकों में किया जाता था।
- इसमें संगीत के साथ अभिनय और नृत्य का समावेश था।
- यह दरबारों और राजाओं के मनोरंजन के लिए गाया जाता था।
- इसमें विभिन्न रागों और तालों का प्रारंभिक विकास देखा जाता है।

गान्धर्व संगीत आगे चलकर विभिन्न प्रबन्धों और ध्रुपद जैसी जटिल रचनाओं में परिवर्तित हुआ।

## श्लोक 3

नाट्ये च गीतविधाने च, गान्धर्वं प्रथितं पुरा।

रागतालसमायुक्तं, देवगान्धर्वस्येवितम्॥

**अर्थ:** गान्धर्व संगीत नाट्य और गीतों की प्रणाली में प्राचीन काल से प्रसिद्ध था। इसमें राग और ताल का समुचित प्रयोग होता था, और देवगण तथा गन्धर्व इसे गाते थे।

#### श्लोक 4

रसभावप्रकर्षेण, गान्धर्वं कीर्तयंत्युतम्।

मृदुता गान्धुरी चात्र, गीतनृत्यविनिर्गितम्॥

**अर्थ:** गान्धर्व संगीत रस और भाव की अभिव्यक्ति में उत्कृष्ट माना जाता था। यह कोमलता और माधुर्य से युक्त था तथा इसमें गायन और नृत्य का समन्वय होता था।

#### 3. प्रबन्ध गान

प्रबन्ध गान भारतीय संगीत का एक अत्यंत महत्वपूर्ण चरण था, जिससे आगे चलकर ध्रुपद विकसित हुआ।

विशेषताएँ:

- इसमें चार प्रमुख भाग होते थे: पद, धातु, तेनक और पत्ता।
- यह शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत का मिश्रण था।
- इसकी रचनाएँ तालबद्ध होती थीं और एक विशिष्ट बंदिश के रूप में प्रस्तुत की जाती थीं।
- यह मंदिरों और दरबारी संगीत का अभिन्न अंग था।

प्रबन्ध गान का प्रभाव ध्रुपद, खयाल और बाद में ठुमरी जैसी शैलियों में देखा जा सकता है।

## श्लोक 5

पदधातुयुतं गीतं, तेनकात्रैः सुशोभितम्।

रागतालसमायुक्तं, प्रबन्धं प्रथितं पुरा॥

**अर्थ:** प्रबन्ध गान चार प्रमुख भागों – पद, धातु, तेनक और पत्ता से युक्त था। इसमें राग और ताल का सुन्दर संयोग होता था, जिससे यह संगीत जगत में प्रसिद्ध हुआ।

## श्लोक 6

नृत्यगीतयुतं पूर्वं, प्रबन्धं ललितं स्मृतम्।

ध्रुपदस्य पिता चैव, तत्स्वरूपं प्रकाशते॥

**अर्थ:** प्रबन्ध गान को प्राचीन काल में नृत्य और गायन के साथ प्रस्तुत किया जाता था। इसे ललित संगीत के रूप में जाना जाता था और इसे ध्रुपद का पूर्वज भी माना जाता है।

## 4. जाति गान

जाति गान ध्रुपद के विकास का एक महत्वपूर्ण चरण था, जिसमें रागों के प्रारंभिक रूपों का निर्माण हुआ।

विशेषताएँ:

- यह रागों की संरचना की पहली व्यवस्थित प्रणाली थी।

- इसमें स्वरों को निश्चित क्रम में रखा जाता था, जिससे रागों की नींव पड़ी।
  - जातियों के आधार पर विभिन्न रागों का निर्माण किया गया।
  - इसमें सप्तस्वरों (सा, रे, ग, म, प, ध, नि) के विविध संयोजन थे।
- जाति गान से ही आगे चलकर रागों की परंपरा विकसित हुई, जो ध्रुपद और अन्य गायन शैलियों का आधार बनी।

## श्लोक 7

स्वरजात्याः सगायोगे, जातिगानं प्रकीर्तितम्।  
रागसृष्टेरिहाद्यन्तं, तस्य मूलं प्रकीर्तयेत्॥

**अर्थ:** जब स्वरों का विशिष्ट रूप में संयोग किया गया, तब जाति गान की उत्पत्ति हुई। यह राग निर्माण की प्रारंभिक अवस्था थी और राग प्रणाली का मूल आधार माना जाता था।

## श्लोक 8

जातयो सप्त संगीते, स्वरसंयोगसंस्थिताः।  
तान्येव परिवर्त्यन्ते, रागरूपं प्रदर्शयेत्॥

**अर्थ:** संगीत में सात प्रकार की जातियाँ होती थीं, जो स्वरों के विशेष संयोजन पर आधारित थीं। इन्हीं के क्रम परिवर्तन से विभिन्न रागों का निर्माण किया गया।

## 5. अपभ्रंश गान

अपभ्रंश गान शास्त्रीय और लोक संगीत के बीच की एक कड़ी थी, जो संस्कृत और प्राकृत भाषा के गीतों पर आधारित थी।

विशेषताएँ:

- इसमें ध्रुवपद (स्थायी) का प्रयोग किया जाता था, जो आगे चलकर ध्रुपद में परिवर्तित हुआ।
- यह लोकधुनों और शास्त्रीय तत्वों का मिश्रण था।
- इसे सामान्य जनता से लेकर विद्वानों तक सभी गाते थे।
- इसमें कथा और भावनाओं की अभिव्यक्ति प्रमुख थी।

अपभ्रंश गान का प्रभाव आगे चलकर ध्रुपद, खयाल, भक्ति संगीत, और लोक संगीत पर पड़ा।

## श्लोक 9

*भाषाभेदसमायुक्तं, अपभ्रंशं तु संगतम्।*

*लोकगीतैः समायुक्तं, सुललितं मनोहरम्॥*

अर्थ: अपभ्रंश गान विभिन्न भाषाई परिवर्तनों के साथ विकसित हुआ। यह लोकगीतों से प्रभावित था और इसकी धुनें अत्यंत मधुर और मनोहर थीं।

## श्लोक 10

ध्रुवपदं सगायुक्तं, गीतं यद्विश्रुतं पुरा।

भाषाभेदसमायोगे, तदपभ्रंशमीरितम्॥

**अर्थ:** जिस गायन प्रणाली में ध्रुवपद का समावेश था और जिसमें विभिन्न भाषाओं का प्रभाव पड़ा, उसे अपभ्रंश गान कहा गया।

### 6. देशी और मार्गी संगीत

भारत के प्राचीन संगीत को मुख्यतः दो भागों में बाँटा गया था:

(क) मार्गी संगीत

- यह धार्मिक और आध्यात्मिक संगीत था।
- इसमें सामगान और गान्धर्व संगीत का समावेश था।
- यह मुख्यतः वेदों और नाट्यशास्त्र पर आधारित था।

(ख) देशी संगीत

- यह लोकपरंपरा और दरबारी संगीत का रूप था।
- इसमें प्रबन्ध गान, जाति गान, और अपभ्रंश गान का समावेश था।
- यह अधिक प्रयोगात्मक और लोकधुनों से प्रभावित था।

देशी और मार्गी संगीत की परंपराओं से ही आगे चलकर ध्रुपद और अन्य शास्त्रीय संगीत शैलियाँ विकसित हुईं।

## श्लोक 11

"मार्गी गीतं तु वेदेषु, देशी गीतं जनप्रियः।  
उभयोर्योगसंयुक्तं, भारतीयं तु कीर्त्यते॥"

अर्थ: मार्गी संगीत वह था, जो वेदों और धार्मिक परंपराओं में गाया जाता था, जबकि देशी संगीत लोकजीवन से जुड़ा हुआ था। दोनों के सम्मिलन से भारतीय संगीत विकसित हुआ।

## श्लोक 12

रागतालविन्यासेन, देशीभावानुगामिनम्।  
मार्गदेशी समायुक्तं, संगीते मूलकारणम्॥

अर्थ: देशी संगीत में राग और ताल का विन्यास भिन्न प्रकार से किया जाता था और यह लोक भावनाओं से प्रेरित होता था। मार्गी और देशी संगीत मिलकर शास्त्रीय संगीत की आधारशिला बने।

### 7. द्रुपद

द्रुपद भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्राचीनतम गायन शैलियों में से एक है। यह गंभीर, शास्त्रीय और धार्मिक भावना से युक्त गायन शैली है, जिसका आधार स्थायी, अंतरा, संचारी और आबोग चार भागों में विभाजित होता है।

विशेषताएँ:

- इसका आधार ध्रुवपद होता है, जिससे इसका नाम "द्रुपद" पड़ा।

- इसमें गंभीरता, गाम्भीर्य और संतुलित लय होती है।
- गायक आलाप से आरंभ करता है, जो धीमी गति से तीव्र गति की ओर बढ़ता है।
- इसका गायन अधिकतर पखावज के संगति में होता है।

प्राचीन समय में यह मंदिरों और राजदरबारों में गाया जाता था।

### श्लोक 13

ध्रुवपदे स्थितं गानं, गाम्भीर्यं ललितं सदा।  
मंदाक्रान्तं सुसंयुक्तं, पखावजध्वनिसंयुतम्॥"

**अर्थ:** द्रुपद वह गायन शैली है जो ध्रुवपद पर आधारित होती है। यह गंभीर, शुद्ध और कोमलता से युक्त होती है। इसका प्रवाह मंदाक्रान्त गति में होता है, तथा यह पखावज की संगति से अलंकृत किया जाता है।

### श्लोक 14

संरागयुक्तं गीतं च, राजमन्दिरसुस्थितम्।  
संप्रदायैः प्रसारितं, गुरुशिष्यपरंपरया॥

**अर्थ:** द्रुपद संगीत रागयुक्त और उच्च कोटि का शास्त्रीय गायन है, जिसे प्राचीन काल में राजदरबारों और मंदिरों में प्रतिष्ठित किया गया। यह गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी संरक्षित रहा है।



## 8. ख्याल

ख्याल भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक विकसित शैली है, जो द्रुपद से जन्मी, परंतु उससे अधिक कोमलता और सौंदर्य लिए हुए है। इसमें रचनात्मकता, तानों की स्वतंत्रता और लयकारी का विशेष स्थान होता है।

विशेषताएँ:

- ख्याल में आलाप, बोल-तान और तानों का प्रमुख स्थान होता है।
- यह दो भागों में विभाजित होता है:
- बड़ा ख्याल – धीरे-धीरे विस्तार पाता है।
- छोटा ख्याल – लयबद्ध और गतिशील होता है।
- यह तबले की संगति में गाया जाता है।

इसमें गायन को अधिक श्रृंगारिक एवं कोमल रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

## श्लोक 15

स्वच्छन्दं कल्पितं गानं, ताले लयसमन्वितम्।  
स्वरभूषितमुद्गीतं, ख्यालः सुकलागतः॥

**अर्थ:** ख्याल गायन एक मुक्त कल्पना पर आधारित शैली है, जिसमें लयबद्धता और ताल का विशेष स्थान होता है। इसमें स्वरों का श्रृंगार किया जाता है, जिससे यह अत्यंत मधुर और प्रभावशाली बनता है।

## श्लोक 16

*मधुरं गानसंपन्नं, विलम्बितद्रुतं तथा।*

*तानालंकारयुक्तं च, ख्यालं विद्विषः स्मरेत्॥*

**अर्थ:** ख्याल संगीत मधुर गायन से परिपूर्ण होता है। इसमें विलंबित (धीमा) और द्रुत (तेज) दोनों प्रकार की गति पाई जाती हैं। इसमें तानों और अलंकारों का प्रयोग किया जाता है, जिससे यह एक उत्कृष्ट शैली बनती है।

## 9. ग़ज़ल

ग़ज़ल मूल रूप से फ़ारसी साहित्य से उत्पन्न काव्य शैली है, जो संगीत में भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इसमें शेर (दोहे) आपस में जुड़े रहते हैं और प्रेम, दर्द, दर्शन, सौंदर्य आदि को अभिव्यक्त करते हैं।

विशेषताएँ:

- इसमें हर शेर स्वतंत्र होता है, परंतु संपूर्ण ग़ज़ल का एक मूल भाव होता है।
- यह अधिकतर तालबद्ध रूप में गाई जाती है।

- इसके गायन में संगीत से अधिक शब्दों और भावों पर बल दिया जाता है।

इसे हारमोनियम और तबले की संगति में प्रस्तुत किया जाता है।

## श्लोक 17

शब्दरत्नविनिर्गिता, भावयुक्ता सुखावहा।

रसालंकारसंयुक्ता, गजलः सुकवीर्गिता॥

**अर्थ:** गजल शब्दों के रत्नों से बनी हुई एक भावप्रधान संगीत शैली है। यह सुखद अनुभव देने वाली होती है, तथा इसमें रस और अलंकारों का सुन्दर प्रयोग होता है। यह काव्यप्रेमियों और गायकों के लिए परम प्रिय होती है।

## श्लोक 18

विरहप्रेमसंयुक्ता, भक्तियुक्ता तथैव च।

मनःसंतोषदा नित्यं, गजलः कविसंप्रिया॥

**अर्थ:** गजल गायन में विरह और प्रेम के भाव प्रमुख होते हैं। कभी यह भक्ति से ओत-प्रोत होती है, तो कभी यह मन को संतोष देने वाली होती है। कवि और संगीत प्रेमी सदैव इसे गाने और सुनने में अनुरक्त रहते हैं।

## 10. ठुमरी

ठुमरी एक अर्द्ध-शास्त्रीय (उप-शास्त्रीय) गायन शैली है, जिसमें प्रेम, भक्ति और श्रृंगार रस की प्रधानता होती है। यह विशेष रूप से ब्रज, अवधी और हिंदी भाषा में गाई जाती है।

विशेषताएँ:

- ठुमरी का आधार भावप्रधानता होती है।
- इसमें स्वतंत्रता से स्वर प्रयोग किया जाता है।
- यह मुख्यतः धीमी गति से गाई जाती है, लेकिन कुछ ठुमरियों में मध्यम या द्रुत गति का प्रयोग भी होता है।
- इसके साथ तबला, हारमोनियम और सारंगी की संगति की जाती है।

बनारस, लखनऊ और पटियाला में ठुमरी की विशेष परंपराएँ विकसित हुईं।

## श्लोक 19

*श्रृंगाररससंयुक्ता, ललितालापसहितगा।*

*मृदुता माधुर्ययुक्ता, ठुमरी नृत्यसंयुता॥*

**अर्थ:** ठुमरी गायन श्रृंगार रस से ओत-प्रोत होती है। इसमें ललित आलाप और कोमलता होती है। यह मधुरता से भरपूर होती है तथा इसे नृत्य की संगति में भी प्रस्तुत किया जाता है।

## श्लोक 20

मृदुतानस्वरसंयुक्ता, वचनालंकारभूषिता।

भक्तियुक्ता च गीतं या, सा ठुमरीति कीर्तिता॥

अर्थ: ठुमरी गायन में कोमल तानें और अलंकारयुक्त शब्दों का प्रयोग होता है। कभी यह भक्ति रस में प्रवाहित होती है, तो कभी श्रृंगारिक भाव से परिपूर्ण होती है। इसलिए इसे ठुमरी कहा जाता है।

### तान

- तान हिंदुस्तानी संगीत में एक विशेष गायन तकनीक है जिसमें गायक या गायिका एक स्वर को बार-बार दोहराता है और इसे विभिन्न तरीकों से प्रस्तुत करता है। तान का उपयोग गायन में आवाज़ की विभिन्नता और स्वरों की गहराई को प्रकट करने के लिए किया जाता है। यह गायन प्रणाली में गायक की योग्यता और तकनीक को पहचानता है।

### ❖ तानों के प्रकार

हिंदुस्तानी संगीत में तान (तानकारी) के कई प्रकार बताए गए हैं। ये तानों की गति, स्वर संयोजन और गायकी की शैली के अनुसार विभाजित किए जाते हैं। नीचे सभी प्रमुख प्रकार दिए गए हैं:

#### 1. शुद्ध तान (Straight Taan)

इसमें स्वर सरल और सीधे क्रम में गाए जाते हैं। इसे 'सपाट तान' भी कहा जाता है।

उदाहरण: स रे ग म, रे ग म प, ग म प ध...

## 2. कुट तान (Broken Taan)

इसमें स्वरक्रम को तोड़कर (zig-zag पैटर्न में) प्रस्तुत किया जाता है।

उदाहरण: स म ग रे, प ध म ग, नि स ध प...

## 3. गमक तान (Gamak Taan)

इसमें प्रत्येक स्वर को झटकेदार अंदाज में दोहराया जाता है। यह तान भारी और प्रभावशाली होती है।

उदाहरण: सस रेरे, गग मम, पप धध...

## 4. मीड वाली तान (Meend Taan)

इसमें स्वरों को जोड़ते हुए (glide) तान लगाई जाती है।

उदाहरण: स—रे—ग—म, ग—म—प—ध...

## 5. सरगम तान (Sargam Taan)

इसमें स्वर नाम (सा, रे, ग, म, प, ध, नि) को स्पष्ट उच्चारण के साथ गाया जाता है।

उदाहरण: सा रे ग म, ग म प ध, म प ध नि...

## 6. लड़ीदार तान (Ladidar Taan)

इसमें एक तान के अंदर छोटी-छोटी तानों की श्रृंखला बनाई जाती है।

तान का प्रवाह लड़ी (chain) की तरह होता है।

### **7. चक्रदार तान (Chakradhar Taan)**

यह तान गोल घुमावदार होती है और इसे बार-बार दोहराया जाता है। यह तान वक्र गति में चलती है।

### **8. ध्रुपद अंग की तान (Dhrupad Ang Taan)**

यह ध्रुपद शैली पर आधारित होती है, जिसमें गहरे और मजबूत स्वर होते हैं।

### **9. खरज की तान (Kharaj Taan)**

इसमें तान को मंद्र सप्तक (low octave) में गाया जाता है।

यह तान गंभीर और प्रभावशाली होती है।

### **10. मुरकी तान (Murki Taan)**

इसमें तान के अंदर मुरकी (स्मॉल नोट्स) का प्रयोग होता है, जिससे यह हल्की और सजीव लगती है।

### **11. तोड़े की तान (Tode Ki Taan)**

इसमें तान को विभिन्न तोड़ों (phrases) में विभाजित करके गाया जाता है।

### **12. झपकदारी तान (Jhapkadari Taan)**

इसमें तान की प्रस्तुति में झटकों और गतियों का विशेष प्रयोग किया जाता है।

### **13. अचल तान (Achal Taan)**

इसमें स्वरक्रम स्थिर गति में रहता है, बिना किसी मुरकी, गमक या मींड के।

### **14. चलत तान (Chalat Taan)**

यह तान गतिशील होती है, जिसमें स्वरों की एक सतत प्रवाहशीलता होती है।

### **15. समांतर तान (Samantar Taan)**

इसमें तान को समानांतर रूप में आगे बढ़ाया जाता है।

### **16. घुमावदार तान (Ghumavdar Taan)**

इसमें तान को गोल-गोल घुमाकर गाया जाता है, जिससे यह अधिक आकर्षक लगती है।

### **17. उल्टी तान (Ulti Taan)**

यह तान पीछे से आगे आती है, यानी आरोह के बजाय अवरोह में ज्यादा बल दिया जाता है।

### **18. बोल तान (Bol Taan)**

इसमें तानों को बंदिश के बोलों के साथ प्रस्तुत किया जाता है।

### **19. लयकारी तान (Laykari Taan)**

इसमें तान को विभिन्न lay (rhythmic patterns) में गाया जाता है, जैसे दुगुन, तिगुन, चौगुन।



## 20. मिस्र तान (Misra Taan)

इसमें विभिन्न प्रकार की तानों को मिलाकर एक मिश्रित तान बनाई जाती है।

## 21. त्वरित तान (Twarit Taan)

यह बहुत तेज गति वाली तान होती है, जिसे त्वरित (rapid) रूप में गाया जाता है।

## 22. विस्तार तान (Vistar Taan)

इसमें तान को धीरे-धीरे विस्तारित किया जाता है, जिससे एक सुगठित प्रभाव पड़ता है।

## 23. हाफ तान (Half Taan)

इसमें तान को आधी गति से गाया जाता है, जिससे स्वर अधिक स्पष्ट लगते हैं।

**तानों की संख्या और विविधता पर श्लोक**

रचनाकार: आचार्य ब्रजेश चतुर्वेदी

## श्लोक 21

षट्त्रिंशत् तु प्रकाराश्च, तानाः संगीते विश्रुताः।

मृदुतीव्रगतिक्रान्ताः, स्वरवैचित्र्यकारिणः॥

**अर्थ:** संगीत में कुल 36 प्रकार की तानें मानी गई हैं। ये कभी मृदु (कोमल) होती हैं, तो कभी तीव्र गति से प्रवाहित होती हैं। इनसे स्वर-संयोजन में विविधता आती है और संगीत की मधुरता में वृद्धि होती है।

**तानों के प्रयोग और प्रभाव पर श्लोक**

## श्लोक 22

रागसंवृद्धिकारिण्यः, तानाः कोमलशक्तयः।

गानविद्याविशुद्ध्यर्थं, प्रयुक्ताः सप्तस्वरैः॥

**अर्थ:** तानें रागों को समृद्ध बनाने वाली और स्वर-शक्ति को कोमलता देने वाली होती हैं। ये गायन विद्या की शुद्धता को बनाए रखने के लिए सप्तस्वरों के साथ प्रयोग की जाती हैं।

**तानों के विभिन्न प्रकारों पर श्लोक**

## श्लोक 23

सरलाः कुट्टका चैव, रेचकाः सप्रपञ्चकाः।

गीतिकाव्यप्रभावश्च, तानाः श्रेयांसि संश्रिताः॥

**अर्थ:** तानों के अनेक प्रकार होते हैं, जैसे सरल तान, कुट्टक तान, रेचक तान और प्रपंच तान। इनका प्रभाव गीति-काव्य पर पड़ता है और ये संगीत की महानता को उजागर करती हैं।

तानों की गति और संगीत में उनकी महत्ता पर श्लोक

## श्लोक 24

आरोहेऽवरोहे चापि, तानाः संगीते दीपकाः।

गमनागमने शक्तिः, ललितं श्रुतिसंगतम्॥

अर्थ: तानों का आरोह (चढ़ाव) और अवरोह (उतराव) संगीत को दीपक (प्रकाशमान करने वाला) बना देता है। इनके द्वारा स्वर-गमन की शक्ति बढ़ती है और यह संगीत को श्रुति-संगति से ललित (मनोरम) बना देती हैं।

तानों के माध्यम से संगीत के उत्कर्ष पर श्लोक

## श्लोक 25

तानाः संगीतरत्नानि, स्वरसौन्दर्यदायिनः।

गायकेषु परं शस्त्रं, येषां विद्या सदा स्थिरा॥

अर्थ: तानें संगीत के बहुमूल्य रत्न हैं, जो स्वर-सौंदर्य को निखारती हैं। वे गायकों के लिए सबसे शक्तिशाली अस्त्र होती हैं, और जो इनका सही प्रयोग करता है, उसकी संगीत विद्या सदा स्थिर रहती है।

रचनाकार: आचार्य ब्रजेश चतुर्वेदी

### निष्कर्ष:

हिंदुस्तानी संगीत में तानों के अनेक प्रकार होते हैं, और ये गायकी तथा वादन की शैली के अनुसार अलग-अलग प्रभाव डालते हैं। तानों का अभ्यास रागदारी संगीत में बहुत महत्वपूर्ण होता है और यह कलाकार की दक्षता को दर्शाता है।

भारतीय संगीत के प्रत्येक शैली में एक अपनी पहचान और महत्व है। यह संगीत सिर्फ राग और ताल का ही नहीं, बल्कि भावनाओं, संवाद, और व्यक्तिगत अभिव्यक्ति का भी प्रतीक है। इसके अलावा, हिंदुस्तानी संगीत ने सामाजिक, सांस्कृतिक, और धार्मिक पहलुओं में भी अपनी भूमिका निभाई है। इसे समझने और महसूस करने के लिए गायक या संगीतकार को इसमें समय, ध्यान, और प्रेम की आवश्यकता होती है।



## 2.

# भारतीय और पश्चिमी शास्त्रीय संगीत: एक विवेचना

---

### उत्पत्ति और विकास

#### भारतीय शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति और विकास

भारतीय शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति वैदिक काल से मानी जाती है। वेदों में संहिताओं के उच्चारण के दौरान स्वर एवं लय का समावेश देखने को मिलता है। नाट्यशास्त्र, जो भरतमुनि द्वारा रचित एक प्राचीन ग्रंथ है, भारतीय संगीत का पहला व्यवस्थित दस्तावेज माना जाता है। इसके बाद विभिन्न कालखंडों में संगीत का निरंतर विकास हुआ:

वैदिक काल (1500-500 ईसा पूर्व): वेदों में संगीतमय ऋचाओं का प्रयोग।

नाट्यशास्त्र काल (500 ईसा पूर्व - 200 ईसवी): भरतमुनि द्वारा राग, ताल और नृत्य का व्यवस्थित विवरण।

गुप्तकाल (3री से 6ठी शताब्दी): ध्रुपद और अन्य गायन शैलियों का विकास।

मध्यकाल (12वीं - 18वीं शताब्दी): अमीर खुसरो द्वारा खयाल गायकी की शुरुआत, मीरा, तुलसी और सूरदास के भजन।

आधुनिक काल (19वीं शताब्दी से वर्तमान): भारतीय संगीत का वैश्विक प्रचार-प्रसार, हिंदुस्तानी और

कर्नाटक संगीत की शाखाएँ।

### **पश्चिमी शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति और विकास**

पश्चिमी शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति प्राचीन ग्रीक सभ्यता से होती है। वहाँ संगीत को गणितीय नियमों और ध्वनियों के संयोजन के रूप में देखा गया। चर्च संगीत, बारोक काल, क्लासिकल और रोमांटिक युग के माध्यम से पश्चिमी संगीत विकसित हुआ:

प्राचीन ग्रीक और रोमन काल: पाइथागोरस ने ध्वनियों के गणितीय सिद्धांत खोजे।

मध्ययुग (500-1400 ईसवी): चर्च संगीत और ग्रेगोरियन चैट्स का विकास।

बारोक काल (1600-1750): योहान सेबेस्टियन बाख और वायोलिन संगीत का विकास।

क्लासिकल युग (1750-1820): वोल्फगैंग अमेडियस मोत्ज़ार्ट और लुडविग वैन बीथोवेन का योगदान।

आधुनिक काल (20वीं शताब्दी से वर्तमान): जैज़, ब्लूज़, रॉक, पॉप और इलेक्ट्रॉनिक संगीत का विकास।

## ❖ राग और ताल विकास

### ● भारतीय संगीत में राग और ताल का विकास

भारतीय संगीत में राग और ताल की परंपरा अनादिकाल से चली आ रही है। राग वह स्वरों का समूह है जो एक विशिष्ट भाव उत्पन्न करता है। ताल लय को नियंत्रित करता है।

#### ● राग:

सात स्वरों (सा, रे, ग, म, प, ध, नि) के विशेष क्रम से राग बनते हैं।

भारतीय संगीत में मुख्यतः 10 थाट प्रणाली (बिलावल, खमाज, भैरव, आदि) और 72 मेलाकर्ता प्रणाली प्रचलित है।

प्रत्येक राग का विशिष्ट समय, भाव और प्रयोजन होता है।

#### ● ताल:

भारतीय संगीत में तालों की विविधता होती है, जैसे – तीनताल (16 मात्राएँ), झपताल (10 मात्राएँ), एकताल (12 मात्राएँ), आदि।

लयकारी और तिहाई जैसी तकनीकों का प्रयोग होता है।

## ❖ पश्चिमी संगीत में स्केल और रिदम का विकास

पश्चिमी संगीत में स्केल, हार्मोनी और रिदम प्रमुख तत्व हैं।

#### ● स्केल:

पश्चिमी संगीत में मेजर स्केल (C Major, G Major) और माइनर स्केल (A Minor, D Minor) होते हैं।



स्केल की संरचना में Whole Step और Half Step का महत्व होता है।

- **रिदम:**

पश्चिमी संगीत में 4/4, 3/4, 6/8 जैसे मीटर का प्रयोग होता है।

सिंकोपेशन (Syncopation) और पॉलीरिदम (Polyrhythm) जैसी जटिल ताल संरचनाएँ पाई जाती हैं।

- ❖ **मौलिक पाठ्यक्रम**

- **भारतीय संगीत की शिक्षा प्रणाली**

भारतीय संगीत में शिक्षा प्रणाली मुख्यतः गुरु-शिष्य परंपरा पर आधारित रही है। आधुनिक काल में यह प्रणाली औपचारिक रूप से संगीत विद्यालयों में उपलब्ध है।

प्राचीनकाल में मौखिक रूप से शिक्षा दी जाती थी।

लिखित ग्रंथों में संगीत रत्नाकर, नाट्यशास्त्र, और रागमाला महत्वपूर्ण हैं।

वर्तमान में Bhatkhande Sangit Vidyapeeth, Prayag Sangeet Samiti, और संगीत विश्वविद्यालयों में शास्त्रीय संगीत की शिक्षा दी जाती है।

- ❖ **पश्चिमी संगीत की शिक्षा प्रणाली**

पश्चिमी संगीत की शिक्षा में स्टाफ नोटेशन, स्केल थ्योरी और हार्मोनी का गहन अध्ययन किया जाता है।

शिक्षा संस्थानों में Berklee College of Music, Julliard School, और Royal Academy of Music प्रमुख हैं।

पश्चिमी संगीत में सोलफेज (Solfège) प्रणाली का उपयोग किया जाता है, जिसमें डो-रे-मी-फा-सो-ला-टी-डो का क्रम होता है।

संगीत कंपोजिशन और ऑर्केस्ट्रेशन की औपचारिक शिक्षा दी जाती है।

### ❖ आधुनिक शिक्षा में भारतीय और पश्चिमी संगीत का समावेश

आज के समय में भारतीय और पश्चिमी संगीत का फ्यूजन आम होता जा रहा है। भारतीय कलाकार पश्चिमी हार्मोनी और पश्चिमी संगीतकार भारतीय रागों का प्रयोग कर रहे हैं।

बॉलीवुड और पॉप संगीत में भारतीय और पश्चिमी तत्वों का मिश्रण देखने को मिलता है।

AR Rahman, Zakir Hussain, और Pt. Ravi Shankar जैसे कलाकारों ने पश्चिमी और भारतीय संगीत को एक नई दिशा दी है।

डिजिटल युग में संगीत शिक्षण के लिए ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, मोबाइल ऐप, और डिजिटल उपकरणों का प्रयोग बढ़ रहा है।

### ❖ भारतीय और पश्चिमी संगीत में शैलीगत विविधताएँ

संगीत केवल ध्वनि का विज्ञान नहीं, बल्कि भावनाओं और अभिव्यक्तियों का माध्यम भी है। भारतीय और पश्चिमी संगीत अपने-अपने ढंग से विकसित हुए हैं और दोनों की शैलीगत विशेषताएँ अनूठी हैं।

## ❖ भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्रमुख शैलियाँ

भारतीय शास्त्रीय संगीत में दो प्रमुख परंपराएँ प्रचलित हैं – हिंदुस्तानी संगीत (उत्तर भारत) और कर्नाटक संगीत (दक्षिण भारत) दोनों की अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं:

### 1. हिंदुस्तानी संगीत:

अधिकतर मौखिक परंपरा पर आधारित।

ध्रुपद, खयाल, ठुमरी, टप्पा, और भजन जैसी विभिन्न शैलियाँ।

राग आधारित गायन और वादन, जिसमें आलाप, विलंबित, मध्य और द्रुत लय का समावेश।

तबला, सितार, सरोद, बांसुरी, और हारमोनियम प्रमुख वाद्ययंत्र।

### 2. कर्नाटक संगीत:

अधिक संरचित और ग्रंथबद्ध परंपरा।

कृति, वर्णम, पदम, और तिल्लाना जैसी रचनाएँ।

रागम-तानम-पल्लवी जैसी गूढ़ संगीत संरचना।

मृदंगम, वीन, घटम, और कांची प्रमुख वाद्ययंत्र।

## ❖ पश्चिमी शास्त्रीय संगीत की प्रमुख शैलियाँ

पश्चिमी शास्त्रीय संगीत भी समय के साथ कई धाराओं में विकसित हुआ। इसमें मुख्य रूप से निम्नलिखित शैलियाँ पाई जाती हैं:

### **1. बारोक संगीत (Baroque Music) – 1600-1750:**

बाख, विवाल्डी, और हैंडेल जैसे संगीतकारों का काल।

जटिल धुनें, पॉलीफोनिक संरचना, और वाद्ययंत्रों का व्यापक उपयोग।

### **2. क्लासिकल संगीत (Classical Music) – 1750-1820:**

मोत्ज़ार्ट और बीथोवेन जैसे महान संगीतकार।

अधिक संतुलित और सरल संरचना।

ऑर्केस्ट्रा और सिम्फनी का उभरना।

### **3. रोमांटिक संगीत (Romantic Music) – 1820-1900:**

लिस्रज़ट, चोपिन और ब्राह्मस जैसे संगीतकारों का योगदान।

भावनात्मक अभिव्यक्ति और व्यक्तिगत शैली पर अधिक बल।

### **4. आधुनिक संगीत (Modern Music) – 20वीं शताब्दी से वर्तमान:**

जैज़, ब्लूज़, रॉक, इलेक्ट्रॉनिक और फिल्म संगीत का विकास।

डिजिटल तकनीक के साथ प्रयोग।

### **❖ भारतीय और पश्चिमी संगीत में वाद्ययंत्रों की तुलना**

#### **● भारतीय वाद्ययंत्र**

भारतीय संगीत में वाद्ययंत्रों को मुख्यतः चार श्रेणियों में बाँटा जाता है:

1. तत वाद्य (तार वाले वाद्ययंत्र) – सितार, सरोद, संतूर, वीणा।
2. अवनद्ध वाद्य (ताल वाद्ययंत्र) – तबला, मृदंगम, पखावज, ढोलक।
3. सुषिर वाद्य (फूंक वाले वाद्ययंत्र) – बांसुरी, शहनाई, नादस्वरम।
4. घन वाद्य (ठोस वाद्ययंत्र) – मंजीरा, घंटा, जलतरंगा।

### ❖ पश्चिमी वाद्ययंत्र

- पश्चिमी संगीत में वाद्ययंत्रों को तीन मुख्य श्रेणियों में बाँटा जाता है:

1. तार वाद्य (String Instruments) – वायलिन, गिटार, पियानो, सेलो।
2. विंड वाद्य (Wind Instruments) – फ्लूट, सैक्सोफोन, ट्रूपेट।
3. परकशन वाद्य (Percussion Instruments) – ड्रम्स, टिम्पानी, जाइलोफोन।

भारतीय और पश्चिमी वाद्ययंत्रों के स्वरूप और ध्वनि में अंतर होते हुए भी, दोनों ही संगीत शैलियों में अब इनका पारस्परिक उपयोग बढ़ रहा है।

### ❖ भारतीय और पश्चिमी संगीत में लिपि (Notation System) का अंतर

- भारतीय संगीत लिपि प्रणाली

भारतीय संगीत में प्राचीनकाल से मौखिक परंपरा ही मुख्य रूप से प्रचलित थी। लेकिन बाद में विभिन्न संगीताचार्यों ने इसे लिपिबद्ध करने का प्रयास किया:

बृहद्देशी (9वीं शताब्दी) और संगीत रत्नाकर (13वीं शताब्दी) में संकेतन पद्धति।

बातखंडे और पलुस्कर पद्धति (20वीं शताब्दी) के माध्यम से आधुनिक स्वर लेखन।

भारतीय संगीत में स्वरों को सा, रे, ग, म, प, ध, नि के रूप में लिखा जाता है।

### ❖ पश्चिमी संगीत लिपि प्रणाली

पश्चिमी संगीत में लिपि का उपयोग प्रारंभ से ही अधिक प्रचलित रहा है। इसमें स्टाफ नोटेशन पद्धति का प्रयोग किया जाता है:

पाँच रेखाओं और चार स्थानों वाला स्टाफ।

नोट्स का संकेतन (A, B, C, D, E, F, G)।

लयबद्धता के लिए विभिन्न नोट्स (Whole Note, Half Note, Quarter Note)।

### ❖ भारतीय और पश्चिमी संगीत का समकालीन प्रभाव और भविष्य

आज भारतीय और पश्चिमी संगीत दोनों ही वैश्विक मंच पर बड़े स्तर पर स्वीकृत हो चुके हैं। इन दोनों धाराओं का प्रभाव विभिन्न आधुनिक संगीत शैलियों में देखा जा सकता है:

## ● भारतीय संगीत का वैश्विक प्रभाव

बॉलीवुड संगीत में पश्चिमी उपकरणों और हार्मोनी का समावेश।

रवि शंकर और ज़ाकिर हुसैन जैसे कलाकारों का पश्चिमी संगीतकारों के साथ फ्यूजन।

योग और ध्यान संगीत में भारतीय रागों का बढ़ता प्रभाव।

## ❖ पश्चिमी संगीत का भारतीय संगीत पर प्रभाव

गिटार, कीबोर्ड और ड्रम सेट का उपयोग भारतीय संगीत में बढ़ा।

जैज़ और ब्लूज़ की शैलियों का भारतीय फिल्म संगीत में समावेश।

संगीत शिक्षा में भारतीय और पश्चिमी प्रणाली का मिश्रण।

## ❖ भविष्य में संगीत की संभावनाएँ

डिजिटल तकनीक और एआई (Artificial Intelligence) के माध्यम से संगीत निर्माण।

ऑनलाइन प्लेटफार्मों के कारण संगीत सीखने की पहुँच बढ़ी।

नए संगीतकारों के लिए भारतीय और पश्चिमी संगीत का मिश्रण एक नया अवसर।

## निष्कर्ष

भारतीय और पश्चिमी संगीत की तुलना करने पर यह स्पष्ट होता है कि दोनों की परंपराएँ समृद्ध और बहुआयामी हैं। भारतीय संगीत में राग-ताल आधारित गहराई है, जबकि पश्चिमी संगीत हार्मोनी और ऑर्केस्ट्रा

संरचना के कारण अद्वितीय है। आधुनिक संगीत में दोनों शैलियों के तत्वों का सम्मिश्रण हो रहा है, जिससे संगीत की नई विधाएँ उभर रही हैं।

आने वाले समय में संगीत का यह वैश्विक संवाद और अधिक सशक्त होगा और भारतीय एवं पश्चिमी संगीत की धरोहर नई ऊँचाइयों तक पहुँचेगी।

निश्चय ही! यहाँ पर "भारतीय और पश्चिमी शास्त्रीय संगीतः एक विवेचना" विषय पर पाँच स्वरलिपिबद्ध संस्कृत श्लोक दिए गए हैं, जिनमें उत्कृष्ट संस्कृत भाषा का उपयोग हुआ है। प्रत्येक श्लोक के साथ उसका सरल अर्थ भी दिया गया है।

## भारतीय संगीत की महिमा

### श्लोक 26

नादब्रह्म स्वरूपोऽयं, रागतालप्रकाशितः।

संयोगे जातये मोक्षं, हिन्दुस्थानी सङ्गीतकम्॥

**अर्थ:** भारतीय संगीत नादब्रह्म का स्वरूप है, जो राग और ताल के माध्यम से प्रकट होता है। इसके संयोग से व्यक्ति मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है, क्योंकि यह आत्मा को शुद्ध करने वाला है।

## पश्चिमी संगीत की विशेषता

### श्लोक 27

स्वरशृङ्खला विना रागं, लयसङ्गतिमाश्रितः।

मेलोड्याः संगतोः शुद्धिं, पाश्चात्यं सङ्गीतकम्॥



**अर्थ:** पश्चिमी संगीत में स्वर-शृंखलाएँ मुख्य होती हैं, जो लयबद्धता पर आधारित होती हैं। इसकी धुनों में मेलोडी और हार्मनी का समन्वय होता है, जिससे यह अपने आप में एक शुद्ध और परिष्कृत धारा बन जाती है।

## भारतीय और पश्चिमी संगीत का तुलनात्मक स्वरूप

### श्लोक 28

रागाश्चिष्ठानतो गीतं, भावसंवेगसंयुतम्।

पाश्चात्ये तु लयः प्रधानः, हार्मोनियं स्वराञ्चितम्॥

**अर्थ:** भारतीय संगीत में राग प्रधान होता है, जो भावनाओं और संवेदनाओं से परिपूर्ण रहता है। वहीं, पश्चिमी संगीत में लय प्रधान होता है और उसमें स्वर-समूहों की हार्मोनी महत्वपूर्ण होती है।

## संगीत का सार्वभौमिक प्रभाव

### श्लोक 29

सङ्गीतेन विना लोके, न कश्चिद् दर्शमाप्नुयात्।

सर्वयुगेषु सर्वत्र, नादः परमगोदयः॥

**अर्थ:** इस संसार में संगीत के बिना कोई भी आनंद प्राप्त नहीं कर सकता। प्रत्येक युग और प्रत्येक स्थान में नाद (ध्वनि) ही परम सुख का कारण होता है।

## भारतीय एवं पाश्चात्य संगीत का समन्वय

### श्लोक 30

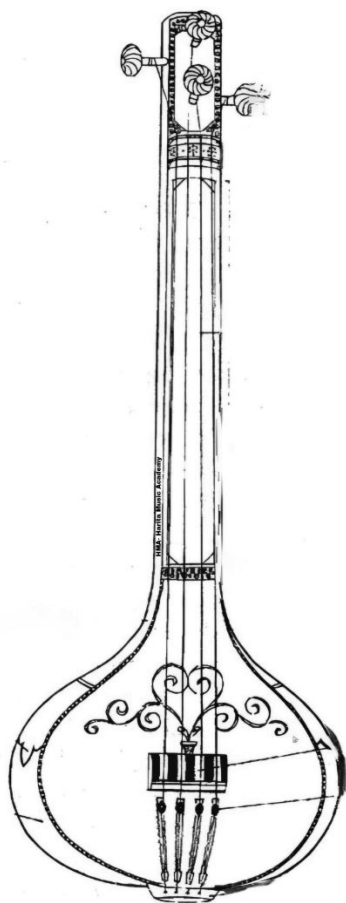
यथा सिक्सं द्वयोर्मैघैः, भूमिर् नानाफलान्विता।

तथा सङ्गीतसंयोगात्, लोको नूतनरूपिणः॥

**अर्थ:**जिस प्रकार दो प्रकार के मेघों (वर्षा करने वाले बादल) से सिंचित भूमि विभिन्न प्रकार के फल उत्पन्न करती है, उसी प्रकार भारतीय और पश्चिमी संगीत के समन्वय से संसार में नूतन (नया) संगीत जन्म लेता है।

### उपसंहारः

ये श्लोक भारतीय और पश्चिमी संगीत की विशेषताओं, उनकी तुलनात्मक विवेचना और उनके समन्वय की शक्ति को उजागर करते हैं। भारतीय संगीत जहां आत्मा की शुद्धि और आध्यात्मिकता से जुड़ा हुआ है, वहीं पश्चिमी संगीत संरचना और हार्मोनी पर केंद्रित है। दोनों का संगम वैश्विक संगीत को एक नई दिशा देने में सक्षम है।



### 3.

## भारतीय शास्त्रीय संगीतः एक अद्वितीय धारणा

---

भारतीय शास्त्रीय संगीत एक अद्वितीय और अत्यंत प्राचीन संगीत पद्धति है जो भारतीय संस्कृति, दर्शन, और जीवनशैली के गहरे अनुसंधान को प्रतिबिंबित करती है। इसका मूल और महत्वपूर्ण अंग राग, ताल, रस, और गायक वादक की भूमिका है। इस प्रकार, भारतीय शास्त्रीय संगीत एक अनूठी प्रक्रिया और अनुभव का समृद्ध भंडार है जो संगीत को एक अद्वितीय और अद्वितीय धारणा बनाता है।

#### ❖ राग: एक अद्वितीय अवधारणा

राग भारतीय संगीत का मौलिक और महत्वपूर्ण अंग है जो विशेष स्वरों की श्रृंखला और क्रम को निर्दिष्ट करता है। रागों के विविध प्रकार होते हैं जैसे भैरवी, देश, तिलंग, और मल्हार आदि। प्रत्येक राग अपनी विशेषता और भावनाओं को प्रकट करता है, जिससे वह एक अद्वितीय और विशेष धारणा बन जाता है।

#### ❖ ताल: संगीत की अवधारणा

ताल संगीत में स्वरों की अवधि को विवरणित करता है और गाने या वादन की अद्वितीयता को निर्दिष्ट करता है। भारतीय संगीत में विभिन्न

प्रकार के ताल होते हैं जैसे त्रिपुत, चौराचौताल, और एकताल। ताल संगीत की गतिशीलता और विविधता को प्रकट करता है और संगीत को जीवंत और आकर्षक बनाता है।

### ❖ रस: संगीत की भावना

रस संगीत में भावनाओं और आनंद को उत्पन्न करने वाला एक महत्वपूर्ण तत्व है। यह गायक और वादक को उसी भावना या भाव को दर्शाने में मदद करता है और संगीत को अधिक संवेदनशील बनाता है।

### ❖ गायक और वादक: संगीत की जीवनदायिनी शक्ति

भारतीय संगीत में गायक और वादक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। गायक राग, रस, और रूप से जुड़े गाने को गाता है, जबकि वादक संगीतकर्म और ताल-मेल को संपन्न करता है। गायक और वादक की यह भूमिकाएं संगीत को जीवंत और अद्वितीय धारणा में रूपांतरित करती हैं।

### ❖ गतिकार्य: संगीत की गतिशीलता

गतिकार्य या लय संगीत की गतिशीलता और जीवंतता को प्रकट करता है। गतिकार्य संगीत में चाल, वेग, और रूपांतर के अंतर से संगीत को अधिक जीवंत और प्रेरणादायक बनाता है।

### ❖ इन्स्ट्रुमेंटेशन: संगीत की समृद्धता

भारतीय संगीत में विभिन्न प्रकार के इन्स्ट्रुमेंट्स का उपयोग होता है, जैसे कि ताबला, सितार, सरोद, और फ्लूट। ये इन्स्ट्रुमेंट्स संगीत की समृद्धता

और विविधता में योगदान करते हैं और संगीत को अधिक समृद्ध बनाते हैं।

## ❖ मूर्च्छना – परिभाषा और व्याख्या

परिभाषा:

मूर्च्छना हिंदुस्तानी और कर्नाटकी संगीत की एक महत्वपूर्ण संगीतमय प्रक्रिया है, जिसमें एक ही राग के स्वरों को अलग-अलग स्वर से प्रारंभ करके नए राग या संगीतमय प्रभाव उत्पन्न किए जाते हैं। इसे स्वरों की पुनरावृत्ति और क्रमबद्ध परिवर्तन की तकनीक भी कहा जा सकता है।

## मूर्च्छना – एक संपूर्ण व्याख्या

### 1. मूर्च्छना का अर्थ क्या है?

मूर्च्छना का अर्थ है "स्वरों का क्रमिक पुनर्गठन"। यह संगीत की एक तकनीक है जिसमें एक ही राग के स्वरों को अलग-अलग स्थान से प्रारंभ करके नया राग या नया संगीतमय प्रभाव उत्पन्न किया जाता है।

### 2. मूर्च्छना को आसान शब्दों में समझें

कल्पना करें कि आपके पास सात स्वरों की एक सीढ़ी है:

सा – रे – ग – म – प – ध – नि – सा

अब, अगर आप इसे "सा" से शुरू करते हैं, तो यह एक राग बनेगा।

लेकिन अगर आप "रे" से शुरू करें और उसी क्रम में चलें, तो यह एक अलग राग का अनुभव देगा।

इसी तरह, हर बार नए स्वर को आधार बनाकर क्रम को दोहराने पर अलग-अलग मूर्च्छनाएँ बनती हैं।

### 3. मूर्च्छना की संगीत में क्या भूमिका है?

यह प्राचीन भारतीय संगीत का एक महत्वपूर्ण भाग था, खासकर जब "थाट" प्रणाली पूरी तरह विकसित नहीं हुई थी।

यह रागों के निर्माण और प्रयोग में मदद करती थी।

यह एक ही राग के भीतर विविधता लाने के लिए उपयोग होती थी।

यह संगीत के अध्ययन और अभ्यास को सरल बनाती है।

### 4. मूर्च्छना का ऐतिहासिक महत्व

प्राचीन काल में भारतीय संगीत को 7 मूल मूर्च्छनाओं में बांटा गया था। धीरे-धीरे, संगीतकारों ने मूर्च्छनाओं को और विकसित करके थाट और मेलकर्ता प्रणाली बनाई, जो आज के रागों का आधार बनी।

### 5. मूर्च्छना का उदाहरण – इसे समझने के लिए एक प्रयोग करें

मान लीजिए कि हमारे पास राग बिलावल (मेजर स्केल) है:

→ सा – रे – ग – म – प – ध – नि – सा

अब, अगर हम इसे "रे" से शुरू करें और उसी क्रम को दोहराएँ:

→ रे – ग – म – प – ध – नि – सा – रे

तो हमें एक अलग संगीतमय अनुभव मिलेगा, जो एक नए राग या उसके किसी उपराग की तरह सुनाई देगा।

इसी तरह, अगर हम इसे "ग" से शुरू करें:

→ ग – म – प – ध – नि – सा – रे – ग

तो यह फिर से एक नया संगीत प्रभाव देगा।

## 6. मूर्च्छना और पश्चिमी संगीत में समानता

पश्चिमी संगीत में इसी तरह की तकनीक को "Modes" (मोड्स) कहा जाता है।

जैसे, C Major Scale (C – D – E – F – G – A – B – C) को अगर D से शुरू करें, तो वह Dorian Mode कहलाता है।

## 7. मूर्च्छना का उपयोग कहाँ होता है?

1. राग परिवर्तन (Modulation) – मूर्च्छना के जरिए एक राग से दूसरे राग में आसानी से प्रवेश किया जा सकता है।
2. रचनात्मकता (Creativity) – संगीतकार अपने प्रदर्शन को अनोखा बनाने के लिए मूर्च्छना का प्रयोग करते हैं।
3. अभ्यास (Practice) – संगीत सीखने वालों के लिए मूर्च्छना का अभ्यास बहुत उपयोगी होता है।



## मूर्च्छना का उदाहरण

**राग 1: राग बिलावल (थाट – बिलावल)**

**मूल स्वरक्रम (आरोह):**

सा – रे – ग – म – प – ध – नि – सा

**मूर्च्छना के उदाहरण:**

1. मूर्च्छना: सा – रे – ग – म – प – ध – नि – सा (मूल राग: बिलावल)
2. मूर्च्छना: रे – ग – म – प – ध – नि – सा – रे (नया प्रभाव: खमाज जैसा)
3. मूर्च्छना: ग – म – प – ध – नि – सा – रे – ग (नया प्रभाव: कल्याण जैसा)
4. मूर्च्छना: म – प – ध – नि – सा – रे – ग – म (नया प्रभाव: काफी जैसा)
5. मूर्च्छना: प – ध – नि – सा – रे – ग – म – प (नया प्रभाव: भैरव या पीलू जैसा)

**राग 2: राग खमाज (थाट – खमाज)**

**मूल स्वरक्रम (आरोह):**

सा – रे – ग – म – प – ध – नि(कोमल) – सा

### मूर्च्छना के उदाहरण:

1. मूर्च्छना: सा – रे – ग – म – प – ध – नि(कोमल) – सा (मूल राग: खमाज)
2. मूर्च्छना: रे – ग – म – प – ध – नि(कोमल) – सा – रे (नया प्रभाव: मिश्र खमाज जैसा)
3. मूर्च्छना: ग – म – प – ध – नि(कोमल) – सा – रे – ग (नया प्रभाव: देश जैसी अनुभूति)
4. मूर्च्छना: म – प – ध – नि(कोमल) – सा – रे – ग – म (नया प्रभाव: पीलू जैसा)
5. मूर्च्छना: प – ध – नि(कोमल) – सा – रे – ग – म – प (नया प्रभाव: झिंझोटी जैसा)

### राग 3: राग भूपाली (थाट – कल्याण)

मूल स्वरक्रम (आरोह):

सा – रे – ग – प – ध – सा

### मूर्च्छना के उदाहरण:

1. मूर्च्छना: सा – रे – ग – प – ध – सा (मूल राग: भूपाली)
2. मूर्च्छना: रे – ग – प – ध – सा – रे (नया प्रभाव: देसकार जैसा)
3. मूर्च्छना: ग – प – ध – सा – रे – ग (नया प्रभाव: मोहन जैसा)
4. मूर्च्छना: प – ध – सा – रे – ग – प (नया प्रभाव: जनसम्मोहिनी जैसा)

## राग 4: राग भैरव (थाट – भैरव)

### मूल स्वरक्रम (आरोह):

सा – रे(कोमल) – ग – म – प – ध(कोमल) – नि – सा

### मूर्च्छना के उदाहरण:

1. मूर्च्छना: सा – रे(कोमल) – ग – म – प – ध(कोमल) – नि – सा  
(मूल राग: भैरव)
2. मूर्च्छना: रे(कोमल) – ग – म – प – ध(कोमल) – नि – सा –  
रे(कोमल) (नया प्रभाव: बिहाग जैसी अनुभूति)
3. मूर्च्छना: ग – म – प – ध(कोमल) – नि – सा – रे(कोमल) – ग (नया  
प्रभाव: जयजयवंती जैसा)
4. मूर्च्छना: म – प – ध(कोमल) – नि – सा – रे(कोमल) – ग – म (नया  
प्रभाव: ललित जैसा)
5. मूर्च्छना: प – ध(कोमल) – नि – सा – रे(कोमल) – ग – म – प (नया  
प्रभाव: रामकली जैसा)

## राग 5: राग यमन (थाट – कल्याण)

### मूल स्वरक्रम (आरोह):

सा – रे – ग – म(तीव्र) – प – ध – नि – सा

### मूर्च्छना के उदाहरण:

1. मूर्च्छना: सा – रे – ग – म(तीव्र) – प – ध – नि – सा (मूल राग:  
यमन)

2. मूर्च्छना: रे – ग – म(तीव्र) – प – ध – नि – सा – रे (नया प्रभावः हमीर जैसा)
3. मूर्च्छना: ग – म(तीव्र) – प – ध – नि – सा – रे – ग (नया प्रभावः नंद जैसा)
4. मूर्च्छना: म(तीव्र) – प – ध – नि – सा – रे – ग – म(तीव्र) (नया प्रभावः मारू बिहाग जैसा)
5. मूर्च्छना: प – ध – नि – सा – रे – ग – म(तीव्र) – प (नया प्रभावः कामोद जैसा)

## मूर्च्छना पर पाँच संस्कृत दोहे

रचनाकार: आचार्य ब्रजेश चतुर्वेदी

### श्लोक 31

स्वरैः संयोजिता मूर्च्छा, गीतं रचयते नवम्।

यस्यां स्वरविन्यासेन, रागान्तरं समाययौ॥

मूर्च्छना स्वर संयोजन द्वारा नया गीत रचती है, जिसमें स्वर विन्यास से राग परिवर्तन होता है।

### श्लोक 32

सा रे गा मा पदं यत्र, भिन्नास्थे प्रचीयते।

मूर्च्छनायाः प्रभावेण, नूतनं रूपं प्रकाशते॥

जब स्वरों का प्रारंभ भिन्न स्थान से होता है, तब मूर्च्छना के प्रभाव से नया रूप प्रकट होता है।

### श्लोक 33

मूर्च्छनायाः स्वराः सप्त, भिन्नक्रमे समास्थिताः।

यथास्थानं गताः सर्वे, रागोऽन्यो दृश्यते ततः॥

मूर्च्छना में सप्त स्वर भिन्न क्रम में स्थित होते हैं, जब वे पुनः क्रमबद्ध होते हैं, तो एक नया राग बनता है।

### श्लोक 34

रागस्य परिवर्तनं यत्र, मूर्च्छनायाः क्रियाफलम्।

स्वरैः संयोगविज्ञानं, संगीतस्य विवर्धनम्॥

जहाँ राग का परिवर्तन होता है, वह मूर्च्छना का परिणाम होता है, यह स्वरों के ज्ञान द्वारा संगीत को विकसित करता है।

### श्लोक 35

स्वराणां योगसंवृद्ध्या, मूर्च्छना जायते सदा।

यस्यां नूतनस्वराभासः, रसवृद्धिः प्रजायते॥

स्वरों के विशेष संयोजन से मूर्च्छना उत्पन्न होती है, जिसमें नए स्वर प्रभाव से रस की वृद्धि होती है।

रचनाकार: आचार्य ब्रजेश चतुर्वेदी

### निष्कर्ष:

मूर्च्छना स्वरों के क्रम को बदलकर नए रागों का अनुभव करने की प्रक्रिया है। जब किसी राग के स्वरों को एक नए स्वर से शुरू करके गाया जाता है, तो वह अलग प्रभाव देता है। यह राग परिवर्तन (modulation) और रचनात्मकता के लिए बहुत उपयोगी तकनीक है। मूर्च्छना संगीत को समझने, सीखने और प्रस्तुत करने का एक प्रभावी तरीका है। यह स्वरों के नए संयोजन द्वारा रागों के नए रूप खोजने में मदद करती है और संगीतकारों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता देती है।

## ❖ ग्रंथ और प्रणाली: संगीत की जानकारी और विकास

भारतीय संगीत में कई प्राचीन ग्रंथ जैसे 'नाट्यशास्त्र', 'संगीत रत्नाकर', 'संगीत दर्पण' आदि हैं जो संगीत की विकास, तत्व, और प्रक्रिया को विस्तार से विवेचित करते हैं। ये ग्रंथ संगीत की जानकारी और समझ में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं और उसे एक प्रकारी और स्वीकृत पद्धति में प्रस्तुत करते हैं।

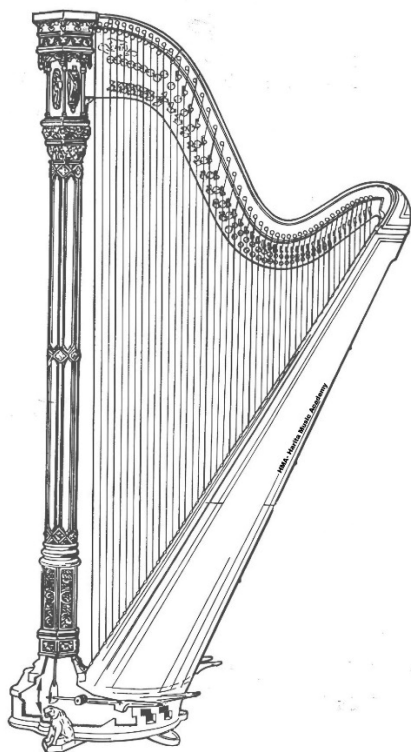
इस प्रकार, भारतीय शास्त्रीय संगीत एक अद्वितीय और अत्यंत समृद्ध पद्धति है जो संगीत को एक अद्वितीय धारणा बनाता है। इसके अंग, तत्व, और प्रक्रिया संगीत को एक अनूठा और अद्वितीय अनुभव में परिणत करते हैं जो उसे विशेष बनाता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत का यह अनूठा और विशेष धारणा भारतीय संस्कृति, दर्शन, और जीवनशैली के साथ गहरी जुड़ाव रखता है और उसे अद्वितीय बनाता है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत एक अद्वितीय, प्राचीन, और भव्य पद्धति है जिसमें संगीत, ध्वनि, और भावना का गहरा संगम होता है। इस संगीत की विशेषता उसकी अनुपम रचना, अद्वितीय तत्वों, और गहरी भावनाओं में निहित है। यह संगीत शैली अपने अद्वितीय रागों, तालों, और धुनों के लिए प्रसिद्ध है। भारतीय शास्त्रीय संगीत की मूल धारा 'राग' है, जो विशेष स्वर से बने हुए अनुरूप गानों को प्रस्तुत करता है। रागों की विविधता उनके भावात्मक और ध्वनिक गुणों में है, जो गायक या वादक के अद्वितीय शैली और धर्म को प्रकट करते हैं। इसके साथ ही, 'ताल' भी भारतीय संगीत में एक निर्धारित अवधि या समय में स्वरों की गति और अवस्थिति को नियंत्रित करने वाला महत्वपूर्ण तत्व है। ताल संगीत की

गतिविधियों को संगठित करता है और संगीत को अद्वितीय ध्वनिक व्यक्तित्व प्रदान करता है। 'रस' भी भारतीय शास्त्रीय संगीत का अद्वितीय अंग है, जो भावनात्मक और आनंदमयी अनुभूतियों का ज्ञान दिलाता है। गायक, वादक, और नृत्यकार, इन तीनों के बीच गहरा संबंध है जो संगीत को अद्वितीय रूप में जीवंत और भावपूर्ण बनाता है। गायक और वादक की विशेषता और व्यक्तित्व भी इस संगीत को अनुपमता और विविधता प्रदान करती है। गायक राग और रस के माध्यम से अपनी भावनाओं और आत्मा को व्यक्त करता है, जबकि वादक संगीत की ध्वनियों और तालों को उसके प्राकृतिक रूप में प्रस्तुत करता है। इस संगीत के अद्वितीय परंपरा और गौरवशाली इतिहास ने इसे विश्व स्तर पर महत्वपूर्ण बनाया है। गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से युवा संगीतकारों और गायकों को अपने गुरुओं से शिक्षा प्राप्त होती है, जो उन्हें उनकी कला में प्रतिष्ठा और प्रकाश प्रदान करते हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत का अद्वितीय और विस्तृत अध्ययन ग्रंथ जैसे 'संगीत रत्नाकर', 'नाट्यशास्त्र', और 'संगीत सार' आदि इस संगीत के विभिन्न पहलुओं और तत्वों को समझने में मदद करते हैं। इन ग्रंथों की विश्लेषणपूर्ण अध्ययन संगीतकारों और श्रोताओं को इस संगीत के अद्वितीय संदेश, संगीतिक तत्वों, और प्रक्रियाओं का समझ से लाभान्वित होता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत अपनी आध्यात्मिक और मानवीय दृष्टिकोण से भी विशेष है। इसकी गाथाएँ, ध्वनियाँ, और राग आध्यात्मिक और आरामदायक अनुभूतियों को उत्पन्न करती हैं जो उसे एक अद्वितीय और परिपूर्ण अनुभूति बनाती है। इस तरीके से, भारतीय शास्त्रीय संगीत विश्व संगीत की विशेष और महत्वपूर्ण धारा है, जो अपने अद्वितीय गुणों, रंग, और शैलियों के साथ दुनिया भर में मान्यता प्राप्त कर रही है।



यह संगीत केवल सुनने का नहीं, बल्कि अनुभव करने का भी एक अद्वितीय तरीका प्रस्तुत करता है, जिसमें राग, ताल, और रस के माध्यम से अनंत आनंद और समृद्धि का अनुभव किया जा सकता है। आशा है कि इस अध्ययन ने आपको भारतीय शास्त्रीय संगीत के गहरे संदर्भ और अद्वितीय अस्तित्व के बारे में अधिक समझ प्रदान की होगी।



## 4.

# पश्चिमी संगीत

---

रचनाकार: आचार्य ब्रजेश चतुर्वेदी

### ❖ स्टाफ की संरचना

#### श्लोक 35

पञ्चरेखाविन्यासेन, लिपिर्यत्र व्यवस्थितः।  
स्वरस्थानं तु तत्रैव, गेयशास्त्रविनिर्मितम्॥

अर्थ: पाँच रेखाओं के विन्यास से निर्मित यह संगीतलिपि सुव्यवस्थित होती है। इसमें स्वर अपने निश्चित स्थान पर स्थित होते हैं, जो गेयशास्त्र के अनुसार निर्मित हैं।

### ❖ क्लिफ़ (Clef) का महत्व

#### श्लोक 36

क्लिफ़ः स्थाप्यते पूर्व, स्वराणां ध्वनिनिर्णये।  
गानस्य स्पष्टिर्देशे, तस्य योगोऽत्र कुत्रचित्॥

**अर्थ:** क्लिफ़ प्रारंभ में स्थापित किया जाता है ताकि स्वर-स्थान और ध्वनि का सही निर्धारण हो सके। यह संगीतमय रचना के स्वरूप को निर्देशित करने में सहायक होता है।\

## ❖ ताल एवं मात्राएँ

### श्लोक 37

तालः सर्वं विधन्ते हि, मात्रामानं स्वनस्य च।

अनुपातेन गीतस्य, संगीते सौख्यमञ्जसा॥

**अर्थ:** ताल ही संपूर्ण संगीत का नियमन करता है और स्वरों की मात्राओं का निर्धारण करता है। इसके अनुपात से ही संगीत में सहज आनंद की अनुभूति होती है।

## ❖ स्वर, समय एवं गतिशास्त्र

### श्लोक 38

स्वरसंयोगसंस्पे, कालमानं विनिर्मितम्।

गानवृत्तेरुपायश्च, लिप्यां सङ्गीतशास्त्रतः॥

**अर्थ:** स्वरों के संयोग से समय-मान (Duration) का निर्माण होता है। यह संगीत की लय और गति को नियंत्रित करने के लिए संगीतलिपि में संगठित किया जाता है।

## ❖ स्टाफ नोटेशन का महत्त्व

### श्लोक 39

लिपिर्या सङ्गीतस्यास्य, रूपं ददाति निश्चितम्।

बिना तस्या न शक्यं हि, गानमेव व्यवस्थितम्॥

**अर्थ:** यह संगीतलिपि (स्टाफ नोटेशन) संगीतमय स्वरूप को सुनिश्चित करती है। इसके बिना किसी गीत का व्यवस्थित रूप में लेखन और प्रदर्शन संभव नहीं है।

**पश्चिमी संगीत, जिसे यूरोपीय संगीत भी कहा जाता है,** विश्व संगीत की एक महत्वपूर्ण और अद्वितीय शाखा है। इसे अपनी विविधता, विशेषता, और गहराई के लिए प्रसिद्ध है। पश्चिमी संगीत का उत्तरी भूमध्य सागर क्षेत्र, पूर्वी एशिया, और मध्य पूर्वी देशों से उत्तेजना प्राप्त हुआ है, लेकिन उसने अपनी विशेष पहचान और व्यक्तित्व का निर्माण किया है।

- **राग और स्केल:** पश्चिमी संगीत में, विभिन्न तरह के स्केल्स और मोड्स होते हैं जैसे कि मेजर, माइनर, पेंटाटोनिक, और ब्ल्यूज़। इन स्केल्स और मोड्स का उपयोग गायक और वादकों द्वारा अपनी रचनाओं में विविधता, गहराई, और विवेचना लाने के लिए किया जाता है। इन स्केल्स के अलावा अलग-अलग स्वरों की विविधता और तर्किकता से भी गीतों में अंतर आता है।
- **हार्मोनी:** हार्मोनी भी पश्चिमी संगीत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यहां विभिन्न स्वरों को मिलाकर एक समृद्ध, अनुकूलित

और सुंदर ध्वनि पैदा की जाती है। यह हार्मोनी वाद्य और गायन दोनों में उपयोग की जाती है, जिससे गीत का अद्वितीय और अद्वितीय अनुभव मिलता है।

- **मेलोडी:** गायक द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली मेलोडी गीत की जीवनदायिनी शक्ति होती है। यह मेलोडी गीत का मुख्य अंग है जो सुनने वालों को गाने में जुड़ता है, उन्हें प्रेरित करता है, और उन्हें अपनी दुनिया में ले जाता है। मेलोडी के जरिए ही गाने की भावना, अभिव्यक्ति, और संदेश पूरे होते हैं।
- **रिथम:** रिथम गीत में मौजूद गतिविधि को प्रकट करता है और उसे समझाने में मदद करता है। यह वाद्य और ताल दोनों में महत्वपूर्ण है। रिथम के माध्यम से गाने का प्रवाह बना रहता है, और लोगों को उसमें आसानी से भागीदारी मिलती है।
- **लिरिक्स और गीत:** गीतों में शब्दों का महत्वपूर्ण स्थान है। यह शब्दों के माध्यम से कहानी, भावना, और गायक की अंतरात्मा को प्रकट करते हैं। लिरिक्स गीत को अधिक संवेदनशील और व्यक्तिगत बनाते हैं, जिससे गाने का अधिक माननीय अनुभव होता है।
- **इंस्ट्रूमेंटेशन:** पश्चिमी संगीत में विभिन्न इंस्ट्रूमेंट्स जैसे कि पियानो, गिटार, वायलिन, और ड्रम्स महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन इंस्ट्रूमेंट्स की मदद से संगीत को समृद्ध और विविध बनाया जाता है। इनका उपयोग गाने में अद्वितीयता और विशेषता लाता है।

पश्चिमी संगीत में हिंदुस्तानी संगीत की तान जैसी कोई सटीक संज्ञा नहीं है, लेकिन कुछ तकनीकें और अवधारणाएं हैं जो इसकी बराबरी कर सकती हैं। ये मुख्य रूप से तेज़ गति में स्वर-संयोजन और ध्वनि की लयबद्ध चपलता से संबंधित होती हैं।

## 1. Melisma (मेलिज़्मा)

परिभाषा: मेलिज़्मा वह तकनीक है जिसमें एक ही अक्षर (syllable) पर कई अलग-अलग स्वर (notes) गाए जाते हैं।

यह तान के समान है क्योंकि इसमें आवाज़ तेज़ गति में विभिन्न स्वरों पर चलती है।

यह पश्चिमी शास्त्रीय, गॉस्पेल, आर एंड बी और पॉप संगीत में बहुत प्रचलित है।

उदाहरण: चर्च संगीत, मारिया केरी और अरिता फ्रैंकलिन के वोकल रन।

## 2. Runs & Riffs (रन और रिफ्स)

परिभाषा: रन और रिफ्स वे छोटे, तेज़ और गतिशील स्वरक्रम (note sequences) होते हैं जो गायन में ऊर्जा और शैली जोड़ते हैं।

यह तानों की तरह उच्च गति में आरोह-अवरोह करते हैं।

आर एंड बी, जैज़ और पॉप में व्यापक रूप से उपयोग होता है।

उदाहरण: Beyoncé और Christina Aguilera के वोकल रन।

### 3. Trills (ट्रिल्स)

परिभाषा: ट्रिल्स दो स्वरों के बीच बहुत तेज़ गति से दोहराव (oscillation) करने की तकनीक है।

यह हिंदुस्तानी संगीत की मुरकी या गमक तान जैसी होती है।

यह आमतौर पर ऑपेरा और वेस्टर्न क्लासिकल संगीत में सुनी जाती है।

उदाहरण: वायलिन और पियानो में बजाई जाने वाली ट्रिल्स।

### 4. Arpeggios (आर्पेज़ियोस)

परिभाषा: आर्पेज़ियो वह तकनीक है जिसमें किसी राग (chord) के स्वरों को एक-एक कर तेजी से गाया या बजाया जाता है।

यह हिंदुस्तानी संगीत की सरगम तान जैसी होती है।

यह वाद्य यंत्रों (गिटार, पियानो) और वोकल दोनों में प्रचलित है।

उदाहरण: पॉप और शास्त्रीय संगीत में स्केल-आधारित मेलोडी।

### 5. Scat Singing (स्कैट सिंगिंग)

परिभाषा: जैज़ संगीत में स्कैट सिंगिंग एक ऐसी शैली है जिसमें गायक बिना किसी निश्चित शब्दों के तेज़ गति से ध्वनियों (nonsense syllables) का प्रयोग करता है।

यह लयबद्ध और तानों जैसी होती है लेकिन इसमें शब्द नहीं होते।

यह जैज़ संगीत में विकसित हुई।

उदाहरण: Ella Fitzgerald और Louis Armstrong का स्कैट सिंगिंग।



## 6. Coloratura (कोलोरातुरा)

परिभाषा: कोलोरातुरा वह गायन शैली है जिसमें उच्च श्रेणी के नोट्स को बहुत तेज और जटिल पैटर्न में गाया जाता है।

यह लड़ीदार तानों के समान है।

मुख्य रूप से ऑपेरा और क्लासिकल गायन में प्रयोग होती है।

उदाहरण: Mozart के "Queen of the Night" aria में soprano coloratura

### निष्कर्ष:

पश्चिमी संगीत में तानों का कोई एक सटीक विकल्प नहीं है, लेकिन मेलिज्मा, रन और रिफ़्स, ट्रिल्स, आर्पेजियोस, स्कैट सिंगिंग और कोलोरातुरा वे तकनीकें हैं जो तानों के समान कार्य करती हैं। ये सभी तेज गति, स्वरों की जटिलता और संगीत की अभिव्यक्ति को बढ़ाने के लिए उपयोग की जाती हैं।

- **जेनर्स:** पश्चिमी संगीत में अनेक प्रकार के जेनर्स होते हैं जैसे कि पॉप, रॉक, जाज़, ब्लूज़, क्लासिकल, और अन्य। इन जेनर्स में अपनी विशेषता और स्टाइल होती है जो संगीत को विविधता प्रदान करती है।
- **थीम और कंसेप्ट:** पश्चिमी संगीत रचनाएं अक्सर एक विशेष थीम या कंसेप्ट को प्रस्तुत करती हैं। थीम और कंसेप्ट अक्सर गीत के माध्यम से जानकारी, शिक्षा, या भावनाओं को साझा करते हैं।

- **कलाकारों का योगदान:** पश्चिमी संगीत के बड़े और प्रभावशाली कलाकार अपनी अद्वितीय अभिव्यक्तियों के माध्यम से संगीत को विशिष्ट बनाते हैं। उनके योगदान से संगीत की अनुपम गहराई और विविधता को मिलता है।
- पश्चिमी संगीत और हिंदुस्तानी संगीत, दोनों ही अद्वितीय संगीत प्रणालियाँ भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, लेकिन इनके बीच महत्वपूर्ण अंतर हैं। पश्चिमी संगीत ने अपनी विशेषता और वैश्विक प्रसार में अपनी असीम लोकप्रियता का विकास किया है।

### **पश्चिमी संगीत का हिंदुस्तानी संगीत के प्रति अधिक उत्कृष्टता:**

- **विशेषता और अनूठापन:** पश्चिमी संगीत में विभिन्न जेनर्स और शैलियों की विशेषता होती है, जिससे विविधता मिलती है। कलाकारों को अपनी विशेषता को व्यक्त करने की स्वतंत्रता मिलती है।
- **व्यक्तिगत अभिव्यक्ति:** पश्चिमी संगीत में कलाकारों को अपनी अद्वितीय अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता मिलती है, जिससे गीतों में उनकी व्यक्तिगतता और दृष्टिकोण प्रकट होता है।
- **ग्लोबल प्रसार:** पश्चिमी संगीत की व्यापकता और विश्वस्तरीय प्रसार की वजह से इसकी लोकप्रियता अधिक है। यह विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त है और अनेक देशों में मान्यता है।

- **संगीतिक विकास और तकनीक:** पश्चिमी संगीत में संगीतिक विकास और तकनीक की अधिक प्राथमिकता होती है। यहां तकनीकी उन्नति को ध्यान में रखते हुए नई तकनीकों का अध्ययन किया जाता है।
- ❖ **पश्चिमी संगीत की ध्वनि, अद्वितीयता, और संरचना में कई महत्वपूर्ण तत्व होते हैं जो इसे विशिष्ट बनाते हैं। निम्नलिखित हैं पश्चिमी संगीत के प्रमुख तत्व:**
- **इंस्ट्रूमेंटेशन (वाद्य-यंत्र):** पश्चिमी संगीत में विभिन्न प्रकार के इंस्ट्रूमेंट्स का प्रयोग होता है। यहां पियानो, गिटार, वायलिन, फ्लूट, और ड्रम्स जैसे यंत्रों का उपयोग होता है। इन इंस्ट्रूमेंट्स की तकनीकी गुणवत्ता और उनकी संयोजन क्षमता पश्चिमी संगीत की विशेषता है।
  - **गायन (वोकलीज़ेशन):** गायक और गायिका की आवाज़ पश्चिमी संगीत में महत्वपूर्ण है। उनके गाने की शैली, एक्सप्रेशन, और स्वरों का प्रयोग संगीत को जीवंत बनाता है और भावनाओं को प्रस्तुत करता है।
  - **लिरिक्स (गीतकारी):** गीतों में शब्दों का महत्वपूर्ण योगदान होता है जो वाक्य, अर्थ, और भावनाओं को व्यक्त करते हैं। गीतकारों की कला संगीत में एक अलग विशेषता और अद्वितीयता प्रदान करती है।

- **राग (स्केल और मोड्स):** पश्चिमी संगीत में भी स्केल और मोड्स की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। ये विशेष स्वर संरचनाएं संगीत की अद्वितीय ध्वनि को प्रदान करती हैं।
- **गाने का प्रारूप और संरचना:** पश्चिमी संगीत में गानों की विभिन्न प्रारूप और संरचना होती है। इन्हीं प्रारूपों में गीत के प्रस्तुतिकरण, स्वर विन्यास, और अनुप्रास महत्वपूर्ण होते हैं।
- **डाइनामिक्स (गतिविधि और ध्वनि की विविधता):** संगीत में गतिविधि और ध्वनि की विविधता का उपयोग होता है जो गीत को अधिक जीवंत और गहरा बनाता है। इससे गाने में विविधता और रोमांच आता है।
- **हार्मोनी (संगीतिक समन्वय):** हार्मोनी में विभिन्न स्वरों को एक साथ मिलाकर गाने की ध्वनि बनाई जाती है। यह ध्वनि संगीत को मेलोडिक और समृद्ध बनाती है।

## ❖ स्केल और मोड्स

### ● मेजर स्केल

मेजर स्केल संगीत में सबसे प्रमुख और पहचानी जाने वाली स्केल है। इसका स्वर व्यवस्था सा, रे, ग, म, प, ध, नि होती है। यह स्केल उत्तेजना, आनंद, और उत्साह का अहसास कराता है। मेजर स्केल का प्रयोग विभिन्न तरह के गानों, संगीत, और रचनाओं में किया जाता है। इसके स्वर समानांतर, समान और विभिन्न स्थानों पर होते हैं, जो इसे संतुलित

और स्थिर बनाता है। मेजर स्केल धीमी और तेज गति वाले संगीत में भी आसानी से उपयोग की जा सकती है।

### ● माइनर स्केल

माइनर स्केल में रवि के अधिकतम स्थिति पर आधारित होता है। इसके स्वर होते हैं - सा, रे, ग, म, प, ध, रवि। इस स्केल में अधिकता में गहराई, दुःख, और भावनात्मकता होती है। माइनर स्केल संगीत में गहराई, भावनाओं को प्रकट करने और संवेदनशीलता को बढ़ाने के लिए प्रयोग होती है। यह स्केल भावनाओं की गहराई को अधिक प्रकट करने के लिए जाना जाता है और उत्तराधिकारी के रूप में बहुत प्रचलित है।

### ● पेंटाटोनिक स्केल

पेंटाटोनिक स्केल में पांच स्वर होते हैं - सा, रे, म, प, ध। इस स्केल में केवल मेलोडी और ध्वनि का महत्व होता है। पेंटाटोनिक स्केल अधिकतर ब्लूज, रॉक, और फोल्क संगीत में प्रयोग होती है। इसके स्वरों में कोई अनुपातिक स्थिति नहीं होती, जिससे इसे समझना और गाना अधिक सरल होता है। इस स्केल का उपयोग साधारण और संवेदनशील संगीत में भी किया जाता है।

### ● डोरियन मोड

डोरियन मोड सात स्वरों पर आधारित होता है और इसमें छह और अवशिष्ट स्वर होते हैं। इस स्केल में छःवें स्वर पर अधिकतम ध्यान दिया जाता है। यह स्केल जाज़ी और उत्तेजक भावनाओं को प्रकट करता है और इसका प्रयोग जाज़, रॉक, और अन्य उत्तेजित संगीत शैलियों में होता

है। इसकी विशेषता यह है कि इसमें अधिकांश स्वरों के बीच अंतर होता है, जिससे यह अनूठी और जाज़ी तरह की ध्वनि प्रदान करता है।

- **फ्रीज़ियन मोड**

फ्रीज़ियन मोड भी सात स्वरों पर आधारित है और इसमें सातवें और पहले स्वर में अंतर होता है। इस स्केल में अंतर उत्तेजना को बढ़ाता है। यह स्केल फ्यूशन और जाज़ संगीत में प्रयोग होता है। इसकी ध्वनि में एक अनूठी पहचान होती है जो इसे अन्य स्केल्स से अलग करती है।

- **लोक्रियन मोड**

लोक्रियन मोड भी सात स्वरों पर आधारित है और इसमें स्वरों की अनियमित व्यवस्था होती है। इस स्केल में अंतर और विविधता अधिक होती है। यह स्केल गहराई और प्रतिष्ठानपूर्णता की भावनाओं को प्रकट करता है। इसकी विशेषता यह है कि इसमें स्वरों की अनियमितता सुनने वाले को संगीत की नई और अनूठी दृष्टिकोण प्रदान करती है।

## ❖ **स्टाफ नोटेशन: एक परिचय**

संगीत, जो मानवता की एक अनूठी भावना है, वह विभिन्न तालों, ध्वनियों और रागों में समृद्ध है। संगीत के इस समृद्धता को सही ढंग से प्रस्तुत करने के लिए 'स्टाफ नोटेशन' एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

- **स्टाफ नोटेशन का इतिहास**

स्टाफ नोटेशन का जन्म मध्यकालीन यूरोप में हुआ। यहां इसकी आवश्यकता पारंपरिक रूप से संगीत की रचना और प्रस्तुतिकरण के लिए

महसूस की गई। अरेबिक, ग्रीक और भारतीय संगीत परंपराओं का उपयोग करके इसका विकास हुआ।

- **स्टाफ नोटेशन का तत्व**

1. **स्टाफ (Staff):** स्टाफ पांच पंक्तियों पर आधारित है, जिसमें स्वरों की प्रस्तुति होती है।
2. **नोट (Note):** नोट संगीत के स्वर को प्रस्तुत करता है।
3. **ग्रेस (Grace):** छोटे स्वरों का प्रस्तुतिकरण है।
4. **आवर्जिन (Rests):** विराम स्थितियों को प्रस्तुत करता है।

- **स्टाफ नोटेशन का उपयोग**

स्टाफ नोटेशन विभिन्न राग, ताल, और लंबाई में संगीत का प्रस्तुतिकरण करने का अद्वितीय माध्यम है। यह संगीत के अध्ययन, अभ्यास, और रचना में सहायक होता है।

- **स्टाफ नोटेशन की विविधता**

स्टाफ नोटेशन में विभिन्न राग और तालों की विविधता देखी जा सकती है। भारतीय संगीत में राग और ताल को चिह्नों और चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।

- **स्टाफ नोटेशन और डिजिटलीकरण**

आज के डिजिटल युग में स्टाफ नोटेशन को संगीत सॉफ्टवेयर के माध्यम से डिजिटलीकरण किया जा रहा है। इससे संगीत के प्रस्तुतिकरण में और भी आसानी हो रही है।

- **स्टाफ नोटेशन और संगीत शिक्षा**

संगीत शिक्षा में स्टाफ नोटेशन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह छात्रों को संगीत को सही तरीके से समझने और उसे प्रस्तुत करने में मदद करता है।

- **संगीत संस्कृति में स्टाफ नोटेशन**

भारतीय संगीत में स्टाफ नोटेशन का अपना विशेष स्थान है। यहां भारतीय राग, ताल और लंबाई में संगीत का प्रस्तुतिकरण किया जाता है।

- **संगीत के अन्य तरीकों का सम्बन्ध स्टाफ नोटेशन से**

अन्य संगीत शैलियों जैसे जाज, रॉक, पॉप आदि में भी स्टाफ नोटेशन का उपयोग किया जाता है। यहां भी यह संगीत की रचना और प्रस्तुति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

- **संगीत की भावना और स्टाफ नोटेशन**

संगीत की भावना और भावनाओं को स्टाफ नोटेशन के माध्यम से सही तरीके से प्रस्तुत करने में मदद मिलती है। यह संगीत की भावना को उचित रूप में प्रकट करता है।

- **संगीत रिकॉर्डिंग और स्टाफ नोटेशन**

संगीत रिकॉर्डिंग में भी स्टाफ नोटेशन का महत्वपूर्ण स्थान है। रिकॉर्डिंग के दौरान संगीतकार और शिल्पी इसे सहायक माध्यम के रूप में प्रयोग करते हैं।

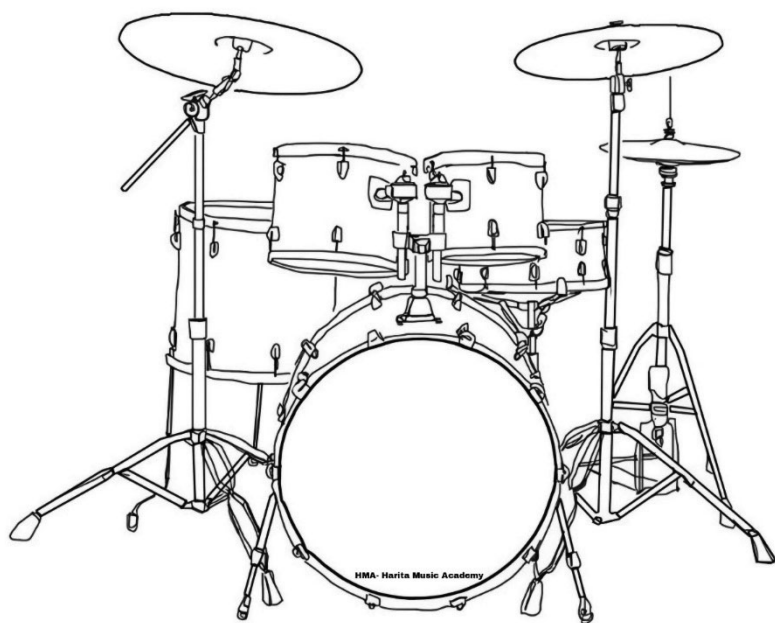


- **संगीत में स्टाफ नोटेशन का अद्वितीय महत्व**

संगीत में स्टाफ नोटेशन का अद्वितीय महत्व है। यह संगीत को स्वर, ताल और लंबाई में प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

- **संगीत का भव्यता में स्टाफ नोटेशन का योगदान**

संगीत के प्रस्तुतिकरण में स्टाफ नोटेशन का योगदान उसे भव्यता और अद्वितीयता प्रदान करता है। इसके माध्यम से संगीत की गहराई, समृद्धता और विविधता प्रकट होती है। स्टाफ नोटेशन में संगीत को एक विशिष्ट तरीके से लिखा जाता है ताकि वह संगीतीय ज्ञान रखने वाले लोगों द्वारा पढ़ा और समझा जा सके। इसमें प्रत्येक स्वर, उसकी ऊंचाई, और उसकी अवधि को प्रतिनिधित्व किया जाता है।



## 5.

# अध्याय: स्टाफ नोटेशन की मूल बातें

---

### परिचय

संगीत एक वैश्विक भाषा है, और इसे लिखने और पढ़ने की एक व्यवस्थित प्रणाली है जिसे स्टाफ नोटेशन (Staff Notation) कहा जाता है। यह मुख्य रूप से पश्चिमी संगीत में उपयोग किया जाता है, लेकिन आजकल संगीतकारों और शिक्षकों के लिए यह प्रणाली किसी भी संगीत शैली को समझने और बजाने के लिए महत्वपूर्ण हो गई है।

इस अध्याय में, हम स्टाफ नोटेशन की संरचना, उसके विभिन्न घटकों, और उनके प्रयोग को विस्तार से समझेंगे।

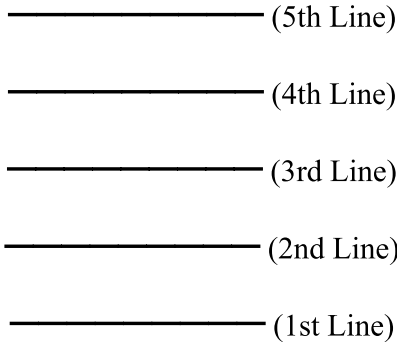
### ❖ स्टाफ (Staff) – संगीत लिखने का आधार

#### ● स्टाफ की संरचना

स्टाफ पाँच समानांतर रेखाओं और चार स्थानों (Spaces) से बना होता है। प्रत्येक रेखा और स्थान को एक विशिष्ट स्वर (Pitch) सौंपा जाता है। जब किसी रेखा या स्थान पर कोई नोट (Note) रखा जाता है, तो वह उस स्वर को दर्शाता है।

- **स्टाफ की रेखाएँ और स्थान (Lines and Spaces)**

नीचे एक पाँच-रेखा स्टाफ का उदाहरण दिया गया है:



रेकॉर्डर और अन्य वाद्ययंत्रों के लिए, इन रेखाओं और स्थानों पर अलग-अलग स्वरों को व्यवस्थित किया जाता है।

- **क्लिफ़ (Clef) – सुरों का निर्धारण**

- **क्लिफ़ का परिचय**

क्लिफ़ वह चिह्न होता है जो स्टाफ के प्रारंभ में रखा जाता है और यह तय करता है कि कौन-से स्वर किस रेखा और स्थान पर होंगे। यह स्टाफ को सही ढंग से पढ़ने और लिखने में मदद करता है।

- **मुख्य प्रकार के क्लिफ़**

- (A) ट्रेबल क्लिफ़ (Treble Clef) या G Clef**

यह दाएँ हाथ के उच्च स्वरों (Higher Pitches) को दर्शाने के लिए प्रयोग किया जाता है।

इसमें E4, G4, B4, D5 और F5 रेखाओं पर स्थित होते हैं, जबकि F4, A4, C5 और E5 स्थानों पर होते हैं।

पियानो, वायलिन, बांसुरी और कई अन्य वाद्ययंत्रों के लिए उपयोग किया जाता है।

### **(B) बेस क्लिफ़ (Bass Clef) या F Clef**

यह बाएँ हाथ के निचले स्वरों (Lower Pitches) को दर्शाने के लिए प्रयोग किया जाता है।

इसमें G2, B2, D3, F3 और A3 रेखाओं पर होते हैं, जबकि A2, C3, E3 और G3 स्थानों पर होते हैं।

पियानो (बाएँ हाथ), गिटार के बास नोट्स, और सेलो जैसे वाद्ययंत्रों में इसका उपयोग किया जाता है।

## **❖ टाइम सिग्नेचर (Time Signature) – ताल और लय का निर्धारण**

### **• टाइम सिग्नेचर का परिचय**

टाइम सिग्नेचर एक गणना प्रणाली है जो यह निर्धारित करती है कि प्रत्येक मेजर (Measure) में कितनी बीट्स होंगी और हर बीट का समय मूल्य क्या होगा।

### **• प्रमुख टाइम सिग्नेचर**

#### **(A) 4/4 टाइम सिग्नेचर (Common Time)**

सबसे अधिक उपयोग होने वाला टाइम सिग्नेचर।

प्रत्येक मेजर में 4 बीट्स होती हैं और प्रत्येक बीट का मूल्य Quarter Note (१/४) के बराबर होता है।

उदाहरण: Twinkle Twinkle Little Star, Happy Birthday

### **(B) 3/4 टाइम सिग्नेचर (Waltz Time)**

प्रत्येक मेजर में 3 बीट्स होती हैं।

आमतौर पर नृत्य संगीत (Waltz) में उपयोग किया जाता है।

**उदाहरण: Blue Danube Waltz**

### **(C) 6/8 टाइम सिग्नेचर (Compound Time)**

इसमें प्रत्येक मेजर में 6 बीट्स होती हैं, जो दो समूहों में विभाजित की जाती हैं।

यह मुख्य रूप से जिग (Jig) और आयरिश संगीत में प्रयुक्त होता है।

## **❖ नोट्स और उनके मूल्य (Notes & Durations)**

### **• नोट्स का महत्व**

संगीत में विभिन्न प्रकार के नोट्स होते हैं, जो यह तय करते हैं कि एक स्वर कितने समय तक बजेगा। प्रत्येक नोट का एक निश्चित समय मूल्य होता है।

- **प्रमुख नोट्स और उनके समय मूल्य**
- **संगीतमय चिह्न और प्रतीक (Musical Symbols and Signs)**

## ❖ डॉटेड नोट (Dotted Notes)

जब किसी नोट के दाईं ओर एक बिंदु (dot) लगा दिया जाता है, तो उसका समय मूल्य 1.5 गुना बढ़ जाता है।

डॉटेड हाफ नोट ( ) = 3 बीट्स

डॉटेड क्वार्टर नोट ( ) = 1.5 बीट्स

### • टाई (Tie) और स्लर (Slur)

टाई (Tie): जब दो समान स्वर (Same Pitch) वाले नोट्स को जोड़ना होता है।

स्लर (Slur): जब अलग-अलग स्वरों (Different Pitches) को एक साथ बजाना होता है।

## ❖ बार लाइन और मापदंड (Bar Lines and Measures)

### • बार लाइन (Bar Line)

बार लाइन्स का उपयोग संगीत को छोटे-छोटे हिस्सों में विभाजित करने के लिए किया जाता है, जिन्हें मेजर (Measure) कहते हैं।

## ❖ प्रमुख प्रकार की बार लाइनें

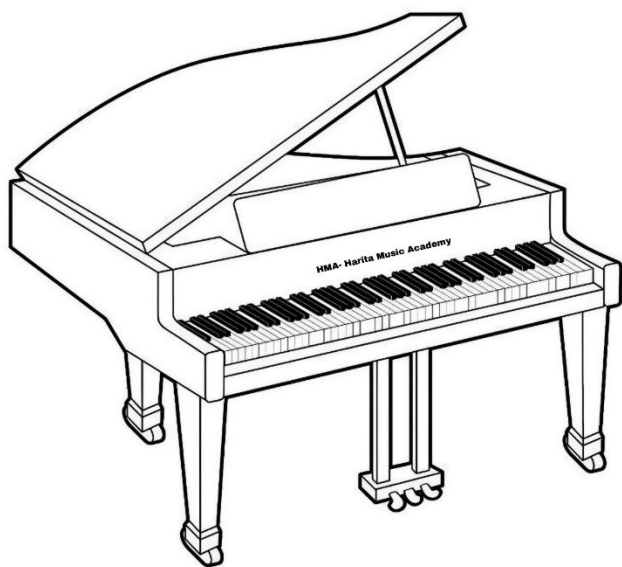
1. सिंगल बार लाइन – एक साधारण विभाजन।
2. डबल बार लाइन – सेक्शन समाप्ति दर्शाने के लिए।
3. फाइनल बार लाइन – संगीत समाप्त होने का संकेत।

## निष्कर्ष

स्टाफ नोटेशन एक अत्यंत प्रभावी और उपयोगी प्रणाली है, जिससे संगीत को पढ़ना और लिखना संभव होता है। इसमें स्टाफ, क्लिफ़, टाइम सिग्नेचर, नोट्स, बार लाइनें और विभिन्न संगीतमय प्रतीक शामिल होते हैं, जो एक संगीत रचना को व्यवस्थित करते हैं।

इस अध्याय में हमने स्टाफ नोटेशन की मूल बातें समझीं। अगले अध्याय में, हम स्टाफ नोटेशन का व्यावहारिक उपयोग और संगीतमय रचनाओं को लिखने की प्रक्रिया को विस्तार से समझेंगे।





## 6.

# स्टाफ नोटेशन में अभिव्यक्ति और गतिशीलता (Dynamics & Expression)

---

संगीत केवल स्वरों और तालों का मेल नहीं है, बल्कि उसमें भावनाएँ (Expressions) और गतिशीलता (Dynamics) भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। स्टाफ नोटेशन में विभिन्न प्रतीकों और संकेतों का प्रयोग किया जाता है, जो किसी रचना में भावनात्मक प्रभाव, ध्वनि की तीव्रता और शैली को व्यक्त करने में सहायक होते हैं। इस अध्याय में, हम गतिशीलता, अभिव्यक्ति के संकेत, और विभिन्न वाद्ययंत्रों में स्टाफ नोटेशन के उपयोग को विस्तार से समझेंगे।

### ❖ गतिशीलता (Dynamics) के संकेत और उनका प्रयोग

गतिशीलता (Dynamics) से तात्पर्य ध्वनि की तीव्रता (Volume) और उसके परिवर्तनों से है। किसी संगीत रचना में गतिशीलता के संकेत यह दर्शाते हैं कि कौन-सा भाग धीमे (Soft) और कौन-सा तेज (Loud) बजाया या गाया जाना चाहिए।

#### (i) प्रमुख गतिशील संकेत (Dynamic Marks)

(ii) ध्वनि की वृद्धि और कमी के संकेत

Crescendo (<) – धीरे-धीरे ध्वनि बढ़ाने का संकेत।

Decrescendo (f) / Diminuendo – धीरे-धीरे ध्वनि घटाने का संकेत।

### उदाहरण:

यदि किसी धुन में Crescendo लिखा है, तो संगीतकार को धीरे-धीरे ध्वनि की तीव्रता बढ़ानी होगी। इसी प्रकार, Decrescendo होने पर संगीत धीरे-धीरे हल्का किया जाएगा।

### ❖ अभिव्यक्ति (Expression) के संकेत

संगीत केवल सही सुर और ताल में बजाने से प्रभावी नहीं बनता, बल्कि उसमें भावनाएँ और अभिव्यक्ति (Expression) भी आवश्यक होती हैं। स्टाफ नोटेशन में विभिन्न अभिव्यक्ति संकेत मौजूद हैं, जो संगीत को अधिक प्रभावशाली बनाते हैं।

(i) गति और शैली (Tempo & Articulation) के संकेत

(ii) गति (Tempo) के संकेत गति यह दर्शाती है कि किसी रचना को कितनी तेज़ या धीमी गति से बजाया जाए।

**Largo** – बहुत धीमा (सुगंभीरता के साथ)

**Adagio** – धीरे, लेकिन भावना के साथ

**Andante** – सामान्य गति (चलने की गति के समान)

**Moderato** – मध्यम गति

**Allegro** – तेज़ और उत्साही

**Presto** – बहुत तेज़

**उदाहरण:** यदि किसी धुन के ऊपर "Allegro" लिखा हो, तो इसे तेज़ और ऊर्जावान तरीके से बजाया जाएगा।

### ❖ विभिन्न वाद्ययंत्रों में गतिशीलता और अभिव्यक्ति के संकेतों का प्रयोग

हर वाद्ययंत्र में गतिशीलता और अभिव्यक्ति के संकेतों का अलग-अलग प्रभाव होता है।

#### (i) वाद्ययंत्रों में गतिशीलता का प्रयोग

पियानो (Piano) – धीमे-तेज़ बदलाव स्पष्ट होते हैं। Crescendo और Decrescendo प्रभावशाली लगते हैं।

गिटार (Guitar) – Strumming या Plucking से Dynamics को व्यक्त किया जाता है।

तबला (Tabla) और ढोलक – तेज़ और हल्के थप्पड़ों (Bol) से गतिशीलता व्यक्त होती है।

वायलिन (Violin) – धीमे और तेज़ गति से धनुष चलाकर (Bow Pressure) भावनाएँ व्यक्त की जाती हैं।

## (ii) गायन (Vocal) में अभिव्यक्ति के संकेतों का प्रयोग

गायन में गतिशीलता और अभिव्यक्ति से शब्दों के भाव अधिक स्पष्ट होते हैं

Soft Notes (p, pp) – भावनात्मक और कोमल गायन के लिए

Loud Notes (f, ff) – नाटकीय और ऊर्जावान प्रभाव देने के लिए

Legato Singing – स्वरों को जोड़कर गाने से एक प्रवाहमय प्रभाव उत्पन्न होता है।

Staccato Singing – शब्दों को छोटे और अलग-अलग उच्चारित करने से चपलता आती है।

## ❖ स्टाफ नोटेशन में गतिशीलता और अभिव्यक्ति का व्यावहारिक उपयोग

गतिशीलता और अभिव्यक्ति के संकेतों को प्रभावी रूप से प्रयोग करने के लिए निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखना चाहिए—

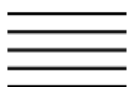
- सही संकेतों का चयन करें – रचना की भावनात्मकता के अनुसार उचित **Dynamics और Expression** का प्रयोग करें।
- व्यायाम करें (Practice with Expression) – नोट्स को केवल सही बजाना ही नहीं, बल्कि भावनात्मक रूप से व्यक्त करना भी महत्वपूर्ण है।

- म्यूजिक स्कोर (Music Score) को ध्यान से पढ़ें – किसी भी रचना को बजाने से पहले उसके **Dynamics** और **Expression** के संकेतों को समझना आवश्यक है।
- म्यूजिक सॉफ्टवेयर का उपयोग करें – MuseScore, Finale, Sibelius जैसे सॉफ्टवेयर से अभ्यास करें।

### निष्कर्ष

इस अध्याय में हमने स्टाफ नोटेशन में गतिशीलता (Dynamics) और अभिव्यक्ति (Expression) के संकेतों को विस्तार से समझा। ये संकेत किसी भी संगीतमय रचना को अधिक भावनात्मक और प्रभावशाली बनाते हैं। उचित गतिशीलता और अभिव्यक्ति से संगीत का प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है।

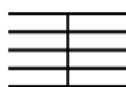
# List of musical symbols



**Staff/Staff  
line**



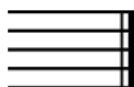
**Ledger/Leger Lines**



**Bar**



**Double Bar Line  
bar line**



**Bold Double Bar Line**



**Dotted**



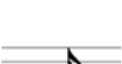
**Brace  
(Treble clef)**



**Bracket**



**G clef**

| Note                                                                               | British name / American name                                                                                                             | Rest                                                                                |
|------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------|
|    | Large (Latin: Maxima) / Octuple whole note[3]                                                                                            |    |
|    | Long / Quadruple whole note[3]                                                                                                           |    |
|    | Breve / Double whole note                                                                                                                |    |
|    | Semibreve / Whole note                                                                                                                   |    |
|    | Minim / Half note                                                                                                                        |    |
|    | Crotchet / Quarter note[4][5]                                                                                                            |    |
|    | Quaver / Eighth note<br>For notes of this length and shorter, the note has the same number of flags (or hooks) as the rest has branches. |    |
|    | Semiquaver / Sixteenth note                                                                                                              |    |
|   | Demisemiquaver / Thirty-second note                                                                                                      |   |
|  | Hemidemisemiquaver / Sixty-fourth note                                                                                                   |  |





Semihemidemisemiquaver / Quasihemidemisemiquaver / Hundred twenty-eighth note[6][7]



Demisemihemidemisemiquaver / Two hundred fifty-sixth note



### Staff/stave

The five-line staff (often "stave" in British usage) is used to indicate pitch. Each line or space indicates the pitch belonging to a note with a letter name: A, B, C, D, E, F, G. Moving vertically upwards, the letter names proceed alphabetically with the alternating lines and spaces, and represent ascending pitches. The A-G pattern repeats continually—the note above "G" is always another "A". A clef is almost always added, which assigns one specific pitch to one specific line; the other lines and spaces are determined alphabetically as described.



### Ledger or leger lines

These additional lines (and the spaces they form) indicate pitches above or below the staff. The diagram shows one ledger line above the staff and one below, but multiple ledger lines can be used.



### Bar line (or barline)

Bar lines separate measures ("bars") of music according to the indicated time signature. They sometimes extend through multiple staves to group them together when a grand staff is used or when indicating groups of similar instruments in a conductor's score.



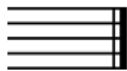
### Double bar line

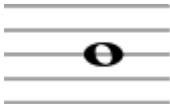
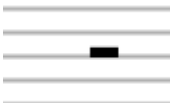
These indicate some change in the music, such as a new musical section, or a new key/time signature.



### Bold double bar line

These indicate the conclusion of a movement or composition.

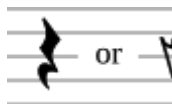


| Note                                                                                | British name / American name                     | Rest                                                                                |
|-------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------|
|    | Large (Latin: Maxima) /<br>Octuple whole note[3] |    |
|    | Long / Quadruple whole<br>note[3]                |    |
|    | Breve / Double whole note                        |    |
|   | Semibreve / Whole note                           |   |
|  | Minim / Half note                                |  |



**Crotchet / Quarter**

**note[4][5]**

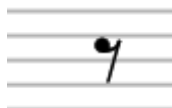


**Quaver / Eighth note**

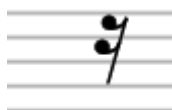
**For notes of this length**



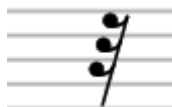
**and shorter, the note  
has the same number of  
flags (or hooks) as the rest  
has branches.**



**Semiquaver / Sixteenth  
note**



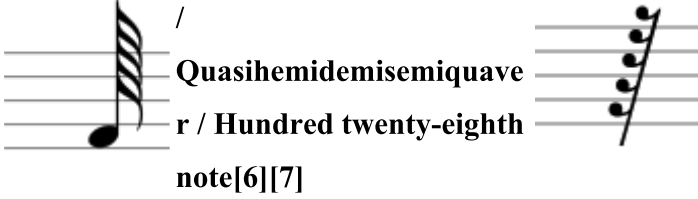
**Demisemiquaver / Thirty-  
second note**



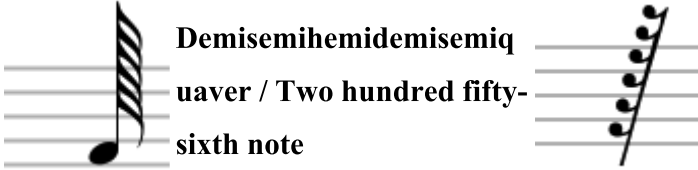
**Hemidemisemiquaver /  
Sixty-fourth note**



### Semihemidemisemiquaver



### Demisemihemidemisemiquaver / Two hundred fifty-sixth note



### Staff/stave

The five-line staff (often "stave" in British usage) is used to indicate pitch. Each line or space indicates the pitch belonging to a note with a letter name: A, B, C, D, E, F, G.

Moving vertically upwards, the letter names proceed alphabetically with the alternating lines and spaces, and represent ascending pitches. The A-G pattern repeats continually—the note above "G" is always another "A".

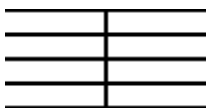
A clef is almost always added, which assigns one specific pitch to one specific line; the other lines and spaces are determined alphabetically as described.

### **Ledger or leger lines**



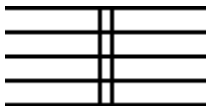
These additional lines (and the spaces they form) indicate pitches above or below the staff. The diagram shows one ledger line above the staff and one below, but multiple ledger lines can be used.

### **Bar line (or barline)**



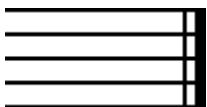
Bar lines separate measures ("bars") of music according to the indicated time signature. They sometimes extend through multiple staves to group them together when a grand staff is used or when indicating groups of similar instruments in a conductor's score.

### **Double bar line**

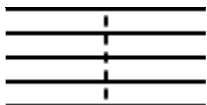


These indicate some change in the music, such as a new musical section, or a new key/time signature.

### **Bold double bar line**



These indicate the conclusion of a movement or composition.



### **Dotted bar line**

These can be used to subdivide measures of

complex meter into shorter segments for ease of reading.

### Brace

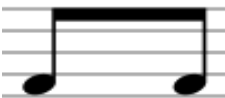


A brace is used to connect two or more lines of music that are played simultaneously, usually by a single player, generally when using a grand staff. The grand staff is used for piano, harp, organ, and some pitched percussion instruments.<sup>[1]</sup> The brace is occasionally called an **accolade** in some old texts and can vary in design and style.

### Bracket



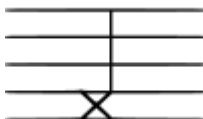
A bracket is used to connect two or more lines of music that sound simultaneously. In contemporary usage it usually connects staves of individual instruments (e.g., flute and clarinet; two trumpets; etc.) or multiple vocal parts, whereas the *brace* connects multiple parts for a *single* instrument (e.g., the right-hand and left-hand staves of a piano or harp part).



### Beamed-notes



**Dotted-note**



**Ghost-note**



**Multi-measure-rest**



**Flat**

The flat symbol lowers the pitch of a note by one semitone.



**Sharp**

The sharp symbol raises the pitch of a note by one semitone.



### Natural

A natural cancels a sharp or flat. This sharp or flat may have been indicated as an accidental or defined by the key signature.



### Double-flat

A double flat lowers the pitch of a note by two semitones.



### Double-sharp

A double sharp raises the pitch of a note by two semitones.

## Flat key signatures



## Sharp key signatures







**Demiflat / Half flat**



**Flat-and-a-half (sesquiflat)**



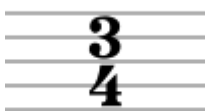
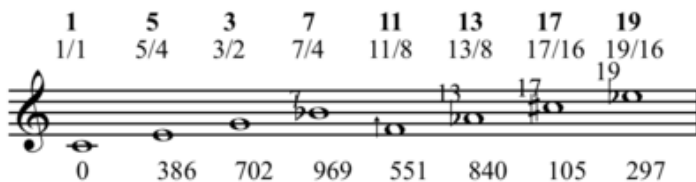
**Demisharp / Half sharp**



**Sharp-and-a-half**  
**half** (sesquisharp)



**Harmonic flat**



**Simple time signatures**  
Simple time signatures are usually classified as those with an upper number of 2, 3, or 4. This example shows that each measure is the length of three quarter notes (crotchets). 3/4 is pronounced as "three-four" or "three-quarter time".



**Compound time signatures**  
In a compound meter, there is an additional rhythmic grouping within each measure. This example shows 6/8 time, indicating 6 beats per measure, with an eighth note representing one beat. The rhythm within each measure is divided into two groups of three eighth notes each (notated by beaming in groups of three). This indicates a pulse that follows the eighth notes

(as expected) along with a pulse that follows a dotted quarter note (equivalent to three eighth notes).

### **Complex/irregular time signatures**

Time signatures that cannot be classified as simple or compound, such as 5/4 or 11/8, are often called complex, irregular or odd. These time signatures cannot be evenly subdivided into groups of two or three.



### **Common time**

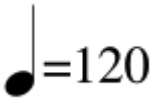
This symbol represents common time—four beats per measure with a quarter note representing one beat. It derives from the broken circle that represented "imperfect" duple meter in fourteenth-century mensural time signatures.





### **Alla breve / cut time**

This symbol represents 2 time—two beats per measure with a half-note representing one beat.



### **Metronome mark**

This notation is used to precisely define the tempo of the music by assigning an absolute duration to each beat. This example indicates a tempo of 120 quarter notes (crotchets) per minute. Many publishers precede the marking with letters "M.M.", referring to Maelzel'



### **Tie**

When tied together, two notes with the same pitch are played as a single note. The length of this single note is the sum of the time values of the two tied notes. The symbol for the tie and the symbol for the slur appear the same, but a tie can join only two notes of the same pitch.

## Slur

While the first note of a slurred group is articulated, the others are not. For bowed instruments this entails playing the notes in a single bow movement, for wind instruments (aerophones) the first note of the slurred group is tongued but the rest of the notes are not—they are played in one continuous breath. On other instruments, like pitched percussion instruments, the notes are connected in a phrase, as if a singer were to sing them in a single breath. In certain contexts a slur may instead indicate that the notes are to be played legato, in which case rearticulation is permitted. While the slur symbol and the tie symbol appear the same, a tie can only connect exactly two notes of the same pitch; a slur can connect two or more of any pitches. In vocal music a slur normally indicates that notes under the slur should be



sung to a single syllable. A phrase mark (or less commonly, ligature) is visually identical to a slur but connects a passage of music over several measures. A phrase mark indicates a musical phrase and may not necessarily require that the music be slurred.

### **Glissando / Portamento**

A continuous, uninterrupted glide from one note to the next that includes the pitches between. Some instruments such as the violin can make this glide continuously (portamento), while other instruments such as the harp blur the discrete pitches between the start and end notes to mimic a continuous slide (glissando).



### **Tuplet**

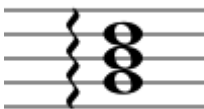
A tuplet is a group of notes that would not normally fit into the rhythmic space they occupy. The example shown is a quarter-note triplet—three

quarter notes are to be played in the space that would normally contain two. (To determine how many "normal" notes are being replaced by the tuplet, it is sometimes necessary to examine the context.) While triplets are the most common version, many other tuplets are possible: five notes in the space of four, seven notes in the space of eight, etc. Specific tuplets are named according to the number of grouped notes; e.g., quintuplets.



### **Chord**

A chord is several notes sounded simultaneously. Two-note chords are called dyads, three-note chords built by using the interval of a third are called triads.



### **Arpeggiated chord**

A chord with notes played in rapid succession, usually ascending, each note being sustained as the others are



संगीत सेतुः

played. It is also called a broken chord, a rolled chord, or an arpeggio.

# Dynamics are indicators of the relative intensity or volume of a musical line.

---

***ppp***

## **Pianississimo**

Extremely soft. Softer dynamics occur very infrequently and would be specified with additional ***ps***.

***pp***

## **Pianissimo**

Very soft.

***p***

## **Piano**

Soft.

***mp***

## **Mezzo piano**

Moderately soft; louder than *piano*.

***mf***

## **Mezzo forte**

Moderately loud; softer than *forte*. If no dynamic appears, *mezzo-forte* is assumed to be the default dynamic level.

***f***

## **Forte**

Loud.

***ff***

**Fortissimo**

Very loud.

***fff***

**Fortississimo**

Extremely loud. Louder dynamics occur very infrequently and would be specified with additional ***f***s.

***sfz***

**Sforzando / Sforzato (subito forzando/forzato)**

Literally "suddenly forced", denotes an abrupt, fierce accent on a single sound or chord. When written out in full, it applies to the sequence of sounds or chords under or over which it is placed. The weaker version is "forzando" or "forzato". Sforzando is not to be confused Also written ***sf*** or ***fz***.

***fp***

**Fortepiano**

Indicates that the note is to be played with a loud attack, and then immediately become soft.

***<***

**Crescendo**

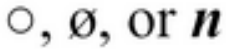
A gradual increase in volume.

Can be extended under many notes to indicate that the volume steadily increases during the passage.



**Diminuendo** / **Decrescendo**

A gradual decrease in volume. Can be extended under many notes to indicate that the volume steadily decreases during the passage.



**Niente**

Meaning "nothing". May be used at the start of a crescendo to indicate "start from nothing" or at the end of a diminuendo to indicate "fade out to nothing".

# Ornaments modify the pitch pattern of individual notes.

---

## Tremolo

A rapidly repeated note. If the tremolo is between two notes, then they are played in rapid alternation. The number of slashes through the stem (or number of diagonal bars between two notes) indicates the frequency to repeat (or alternate) the note. As shown here, the note is to be repeated at a demisemiquaver (thirty-second note) rate, but it is a common convention for three slashes to be interpreted as "as fast as possible", or at any rate at a speed to be left to the player's judgment.



In percussion notation, tremolos indicate rolls, diddles, and drags. Typically, a single tremolo line on a sufficiently short note (such as a sixteenth) is played as a drag, and a combination of three stem and tremolo lines indicates a double-stroke roll (or a single-stroke roll, in the case of timpani, mallet percussion and some untuned percussion instruments such as triangle and bass drum) for



a period equivalent to the duration of the note. In other cases, the interpretation of tremolos is highly variable, and should be examined by the director and performers. The tremolo symbol also represents flutter-tonguing.

### Trill



A rapid alternation between the specified note and the next higher note (determined by key signature) within its duration, also called a "shake". When followed by a wavy horizontal line, this symbol indicates an extended, or running, trill. In music up to the time of Haydn or Mozart the trill begins on the upper auxiliary note.[9] In percussion notation, a trill is sometimes used to indicate a tremolo. In French baroque notation, the trill, or *tremblement*, was notated as a small cross above or beside the note.

### Upper mordent



Rapidly play the principal note, the next higher note (according to key signature) then return to the principal note for the remaining duration. In some music, the mordent begins on the auxiliary note, and the alternation between the two notes may be extended. (In other words, in some music, the upper-mordent sign means exactly the same as the trill sign.) Regardless

of the style of music, the pattern finishes on the principal note. In handbells, this symbol is a "shake" and indicates the rapid shaking of the bells for the duration of the note.

### Lower mordent (inverted)



Rapidly play the principal note, the note below it, then return to the principal note for the remaining duration. In much music, the mordent begins on the auxiliary note, and the alternation between the two notes may be extended.



### Gruppetto or Turn

When placed directly above the note, the turn (also known as a gruppetto) indicates a sequence of upper auxiliary note, principal note, lower auxiliary note, and a return to the principal note. When placed to the right of the note, the principal note is played first, followed by the above pattern. Placing a vertical line through the turn symbol or inverting it, it indicates an inverted turn, in which the order of the auxiliary notes is reversed.



\



### **Appoggiatura**

The first half of the principal note's duration has the pitch of the grace note (the first two-thirds if the principal note is a dotted note).



### **Acciaccatura**

The acciaccatura is of very brief duration, as though brushed on the way to the principal note, which receives virtually all of its notated duration. In some styles of music, the acciaccatura is played exactly on the beat and the principal note is marginally late; in other styles.



## 7.

# भारतीय शास्त्रीय संगीत और पाश्चात्य शास्त्रीय संगीत: एक गहन अध्ययन

---

संगीत मानव सभ्यता का अभिन्न अंग है और इसकी अभिव्यक्ति विभिन्न संस्कृतियों में अलग-अलग रूपों में हुई है। भारतीय शास्त्रीय संगीत और पाश्चात्य (पश्चिमी) शास्त्रीय संगीत दो प्रमुख संगीतमय धाराएँ हैं, जो अपने स्वरूप, सिद्धांत, संरचना, प्रदर्शन शैली और दार्शनिक दृष्टिकोण में भिन्न हैं। दोनों का विकास अलग-अलग सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में हुआ है, जिससे इनकी विशेषताएँ भी भिन्न हैं। इस अध्ययन में, हम इन दोनों संगीत प्रणालियों की विस्तार से तुलना करेंगे

### ❖ उद्भव एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारतीय शास्त्रीय संगीत की जड़ें प्राचीन वैदिक परंपरा में मिलती हैं। इसका उल्लेख सामवेद में मिलता है, जिसमें मंत्रों को गाने की विशेष प्रणाली विकसित की गई थी। कालांतर में, भरतमुनि के नाट्यशास्त्र और पंडित शारंगदेव के संगीत रत्नाकर जैसे ग्रंथों ने भारतीय संगीत के सिद्धांतों को परिभाषित किया। भारतीय संगीत मुख्यतः गायन-प्रधान (melodic-

centric) प्रणाली है, जिसमें राग और ताल का विशेष महत्व है। यह दो प्रमुख धाराओं में विकसित हुआ:

## 1. हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत (उत्तर भारत)

## 2. कर्नाटिक शास्त्रीय संगीत (दक्षिण भारत)

### ❖ पाश्चात्य शास्त्रीय संगीत

पाश्चात्य संगीत की जड़ें प्राचीन ग्रीस और यूरोप की धार्मिक संगीत परंपराओं में मिलती हैं। इसका प्रारंभिक स्वरूप ग्रेगोरियन चैंट्स के रूप में देखा जाता है, जो चर्च में गाए जाते थे। पुनर्जागरण (Renaissance) और बैरोक (Baroque) काल में बाख (Bach), बीथोवेन (Beethoven), और मोजार्ट (Mozart) जैसे संगीतकारों ने इसे उन्नत किया।

यह संगीत हार्मनी (Harmony), कॉर्ड्स (Chords) और ऑर्केस्ट्रा (Orchestra) आधारित प्रणाली पर चलता है। यह मुख्यतः लिखित (Notation-based) संगीत पर आधारित है, जहां हर धुन पहले से स्कोर में लिखी जाती है।

### ❖ संगीत का आधार: राग बनाम स्केल

#### ● भारतीय शास्त्रीय संगीत – राग प्रणाली

भारतीय संगीत में "राग" का विशेष महत्व है। प्रत्येक राग एक विशिष्ट भाव, समय और परिस्थिति से जुड़ा होता है। यह "आरोह-अवरोह"

(ascending-descending notes) और विशिष्ट स्वर प्रयोगों पर आधारित होता है।

### उदाहरण:

राग यमन – शांत और भक्ति भाव

राग भीमपलासी – विरह और करुणा

राग दरबारी – गंभीरता और गहराई

### ❖ पाश्चात्य शास्त्रीय संगीत – स्केल प्रणाली

पाश्चात्य संगीत में "स्केल" का प्रयोग किया जाता है, जो एक निश्चित क्रम में बजने वाले स्वरों का समूह होता है। इसमें मुख्यतः दो प्रकार के स्केल होते हैं:

1. Major Scale (मुख्य स्केल) – यह उज्ज्वल और आनंददायक ध्वनि उत्पन्न करता है। उदाहरण: C Major (C-D-E-F-G-A-B-C)

2. Minor Scale (माइनर स्केल) – यह गहरी और भावनात्मक ध्वनि उत्पन्न करता है। उदाहरण: A Minor (A-B-C-D-E-F-G-A)

### ● मुख्य अंतर:

भारतीय संगीत में राग एक संगीतमय व्यक्तित्व की तरह होता है, जिसमें स्वरों का विशिष्ट क्रम और उनका भावनात्मक प्रभाव महत्वपूर्ण होता है। पाश्चात्य संगीत में स्केल एक निश्चित पैटर्न होता है, जो हार्मनी और कॉर्ड्स के निर्माण में सहायता करता है।

## ❖ लय और ताल संरचना

### ● भारतीय ताल प्रणाली

भारतीय संगीत में ताल चक्रीय (Cyclic) प्रणाली पर आधारित होता है, जिसमें प्रत्येक ताल की सम (strong beat), खंड (sections), और बोल (syllables) होते हैं।

#### उदाहरण:

तिनताल – 16 मात्रा (धा धिन धिन धा | धा धिन धिन धा | धा तन तन धा | धा धिन धिन धा)

### ● पाश्चात्य मीटर प्रणाली

पाश्चात्य संगीत में मीटर (Meter) का उपयोग किया जाता है, जो समय के अनुसार विभाजित बीट्स (Beats) का एक समूह होता है।

#### उदाहरण:

4/4 Time Signature – चार बीट्स प्रति माप

3/4 Waltz Rhythm – तीन बीट्स प्रति माप

#### मुख्य अंतर:

भारतीय संगीत में ताल लयबद्ध चक्रों पर आधारित होता है।

पाश्चात्य संगीत में टाइम सिग्नेचर और बीट्स प्रति मिनट (BPM) से लय को मापा जाता है

## ❖ वाद्ययंत्रों की तुलना

### ● भारतीय वाद्ययंत्र

तंतु वाद्य (String Instruments) – सितार, सरोद, वीणा

वात वाद्य (Wind Instruments) – बांसुरी, शहनाई

ताल वाद्य (Percussion Instruments) – तबला, मृदंगम, पखावज

### ● पाश्चात्य वाद्ययंत्र

तंतु वाद्य – वायलिन, गिटार, सेलो

वात वाद्य – ट्रूपेट, क्लैरिनेट

ताल वाद्य – ड्रम, टिम्पानी

कीबोर्ड वाद्य – पियानो, ऑर्गन

### मुख्य अंतर:

भारतीय संगीत में स्वर लहरी और भावनात्मक अभिव्यक्ति पर अधिक जोर दिया जाता है।

पाश्चात्य संगीत में सामूहिक ऑर्केस्ट्रा और हार्मोनिक संतुलन अधिक महत्वपूर्ण होते हैं।

## ❖ संगीत शिक्षण प्रणाली

भारतीय संगीत शिक्षण

गुरु-शिष्य परंपरा

मौखिक और व्यवहारिक शिक्षा

रागों और तालों का गहरा अध्ययन

### ❖ पाश्चात्य संगीत शिक्षण

नोटेशन और स्कोर पर आधारित शिक्षा

संरचित पाठ्यक्रम और परीक्षा प्रणाली

ऑर्केस्ट्रा और सामूहिक प्रशिक्षण

### मुख्य अंतर:

भारतीय संगीत में "श्रवण और अभ्यास" (Listening & Practice) को प्राथमिकता दी जाती है।

पाश्चात्य संगीत में "लिखित स्कोर" (Written Music) के आधार पर प्रदर्शन किया जाता है।

### निष्कर्ष

भारतीय और पाश्चात्य शास्त्रीय संगीत दोनों अपनी-अपनी विशेषताओं के कारण अद्वितीय हैं। भारतीय संगीत में राग, लय और भावनात्मक अभिव्यक्ति प्रमुख हैं, जबकि पाश्चात्य संगीत हार्मनी, कॉर्ड्स और ऑर्केस्ट्रेशन पर केंद्रित है। दोनों ही संगीत प्रणालियाँ विश्व संगीत को समृद्ध बनाती हैं, और इनके संलयन (Fusion Music) से नए संगीत रूपों का विकास हो रहा है।

## समापन:

# भारतीय शास्त्रीय संगीत— एक सनातन धरोहर

---

संगीत केवल ध्वनियों का संयोजन नहीं, बल्कि आत्मा का स्पंदन है। यह केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि ध्यान, भक्ति और आत्म-जागृति का साधन है। भारत का शास्त्रीय संगीत इसी गूढ़ दर्शन का प्रतीक है, जो वेदों से लेकर आज तक हमारी संस्कृति की आत्मा बना हुआ है। किन्तु आधुनिक युग में, जब तेज़ी से बदलती जीवनशैली और वैश्विक प्रभाव हमारी परंपराओं को चुनौती दे रहे हैं, तब हमें यह विचार करना होगा कि क्या हम अपने इस अमूल्य खजाने को सुरक्षित रख पाएंगे?

इस ग्रंथ के माध्यम से हमने भारतीय शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति, इसकी विशिष्टताएँ, इसकी तुलनात्मक अध्ययन, और आधुनिक युग में इसकी चुनौतियों को समझने का प्रयास किया। अब, इस यात्रा को एक सार्थक निष्कर्ष तक पहुँचाने का समय है।

### भारतीय शास्त्रीय संगीत की महिमा

#### ● आध्यात्मिक आधार

भारतीय संगीत मात्र ध्वनि का खेल नहीं, यह नाद योग है, जो आत्मा को ब्रह्मांडीय ऊर्जा से जोड़ता है। ओंकार से उत्पन्न स्वर हमारे अस्तित्व का

आधार हैं। यह संगीत केवल कानों को नहीं, आत्मा को भी स्पर्श करता है।

### ● प्रकृति के साथ सामंजस्य

हमारे रागों का निर्माण प्रकृति के नियमों के आधार पर हुआ है—राग भैरव सुबह के सूर्योदय के साथ ऊर्जा भरता है, राग यमन संध्या की शांति लाता है, और राग मालकौंस रात्रि में गहन ध्यान की अनुभूति कराता है। पश्चिमी संगीत में यह गहराई नहीं पाई जाती, वहाँ समय और भावनाओं का ऐसा सीधा संबंध स्थापित नहीं किया गया है।

### ● भावनाओं की अभिव्यक्ति

भारतीय संगीत रस और भावनाओं का जटिल संयोजन है—श्रृंगार, वीर, करुण, हास्य, अब्धुत, भयानक, रौद्र, शांत और वीभत्स। यह संगीत न केवल मन की अवस्था को दर्शाता है, बल्कि उसे आकार भी देता है।

### ● आधुनिक युग में भारतीय संगीत की चुनौतियाँ

आज, जब तेज़ी से पश्चिमी प्रभाव हमारे संगीत में घुलता जा रहा है, जब संगीत सीखने और सिखाने की पारंपरिक प्रणालियाँ लुप्त हो रही हैं, जब हमारे शास्त्रीय वाद्ययंत्र उपेक्षित हो रहे हैं, तब यह आवश्यक हो जाता है कि हम आत्ममंथन करें—क्या हमारी अगली पीढ़ी इस सांस्कृतिक खजाने को संजोने के लिए तैयार है?

→ क्या हमारे पास पर्याप्त मंच हैं जहाँ शुद्ध भारतीय संगीत को स्थान मिले?



→ क्या संगीत को मात्र व्यावसायिक सफलता का माध्यम बना देना उचित है?

→ क्या हम आधुनिकता को अपनाते हुए अपनी मौलिकता को बचा सकते हैं?

## ❖ भारतीय संगीत की रक्षा और पुनर्जागरण

### ● शिक्षा प्रणाली में सुधार

गुरु-शिष्य परंपरा को पुनर्जीवित करना होगा।

भारतीय स्वरलिपि प्रणाली को बढ़ावा देना होगा, ताकि पाश्चात्य निर्भरता समाप्त हो।

विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में भारतीय शास्त्रीय संगीत को अनिवार्य विषय बनाया जाए।

### ● सांस्कृतिक संरक्षण

सरकार और निजी संगठनों को मिलकर भारतीय संगीत को प्रोत्साहित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर फेस्टिवल्स और प्रतियोगिताएँ आयोजित करनी चाहिए।

भारतीय संगीत की महत्ता को सिनेमा, वेब सीरीज़ और डिजिटल प्लेटफार्मों में प्रमुखता दी जाए।

### ● तकनीक और संगीत का संतुलन

आधुनिक उपकरणों और प्लेटफार्मों का प्रयोग भारतीय संगीत के प्रचार-प्रसार में किया जाए।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डिजिटल रिकॉर्डिंग का उपयोग करके प्राचीन रागों और बंदिशों को संरक्षित किया जाए।

### ● भविष्य की ओर एक दृष्टि

आज हम एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़े हैं। हम या तो आधुनिकता की दौड़ में अपनी परंपराओं को भुला सकते हैं, या फिर नवाचार और परंपरा के संतुलन से भारतीय संगीत को वैश्विक पहचान दिला सकते हैं।

→ भारतीय संगीत को विश्व पटल पर एक नई ऊँचाई पर पहुँचाने की ज़िम्मेदारी हमारी है।

→ हमें अपनी नई पीढ़ी को यह सिखाना होगा कि संगीत केवल एक ध्वनि नहीं, बल्कि आत्मा का संवाद है।

→ हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि भारतीय संगीत केवल इतिहास का विषय न बन जाए, बल्कि वर्तमान और भविष्य की भी धरोहर बना रहे।

### ❖ निष्कर्ष: एक आह्वान

यह ग्रंथ केवल एक अध्ययन नहीं, एक प्रेरणा और एक संकल्प है। भारतीय शास्त्रीय संगीत केवल हमारा अतीत नहीं, बल्कि हमारा भविष्य भी है।

→ यह संगीत हमें जोड़ता है—प्रकृति से, संस्कृति से, और स्वयं अपने अस्तित्व से।

→ यह संगीत केवल मनोरंजन नहीं, एक आध्यात्मिक यात्रा है।

→ यह संगीत हमारी आत्मा की आवाज़ है, और इसे सहेजना हमारी ज़िम्मेदारी है।

**अब समय आ गया है कि हम अपने संगीत को पुनः उसकी गौरवशाली स्थिति में स्थापित करें।**

→ क्या हम तैयार हैं इस दायित्व को निभाने के लिए?

→ क्या हम अपने संगीत को केवल सुनेंगे, या इसे जिएँगे भी?

→ क्या हम इसे अगली पीढ़ी तक पहुँचाने का संकल्प लेंगे?

यदि उत्तर "हाँ" है, तो यह ग्रंथ अपने उद्देश्य में सफल हुआ।

# भारतीय संगीत अमर है— और इसे अमर बनाए रखना हमारा कर्तव्य है!

---

**श्लोक:40**

नादो हि ब्रह्म स्वरं जीवितं च, संगीतमेतत् सनातनं ध्रुवम्।  
यं रक्षते योगिनः भावभक्त्या, तं लोपयन्ति विलासिनः किल॥

**रचनाकारः आचार्य ब्रजेश चतुर्वेदी**

**लेखक परिचय**

मैं ब्रजेश चतुर्वेदी, भारतीय संगीत और सनातन संस्कृति का साधक हूँ। मेरा जीवन गुरुकुलीय परंपराओं के अंतर्गत पला-बढ़ा, जहाँ मैंने वेदों, शास्त्रों और संगीत का विधिवत अध्ययन किया। मेरी वेद-विषयक शिक्षा परम श्रद्धेय महंत बृज किशोर दास जी महाराज एवं महंत भक्तमाल जी के संरक्षण में संपन्न हुई। किंतु यदि आज मैं इस मार्ग पर हूँ, तो उसका सम्पूर्ण श्रेय मेरे पूज्य गुरुदेव परमहंस स्वर्गीय श्री रामकृष्ण शास्त्री जी (दादाजी) को जाता है।

परमहंस श्री रामकृष्ण शास्त्री जी केवल मेरे मार्गदर्शक ही नहीं, अपितु मेरे जीवन के आधारस्तंभ थे। उन्हीं की कृपा से मैं गुरुकुल जा सका, उन्हीं की प्रेरणा से मैंने वेद और संगीत के पथ को अपनाया। उन्होंने

जीवन के हर कठिन मोड़ पर मेरा संबल बनकर मुझे आगे बढ़ाया, और जब भी मैं डगमगाया, उनकी दी गई शिक्षाओं ने मुझे संभाला। आज वे भौतिक रूप से इस संसार में नहीं हैं, किंतु उनका आशीर्वाद एवं उपदेश मेरे जीवन के प्रत्येक निर्णय में सदैव उपस्थित रहते हैं। उनकी अनुपस्थिति आज भी मुझे व्यथित करती है, परंतु उनकी दी हुई सीख ही मेरा संबल है।

गुरुकुलीय अध्ययन के दौरान ही मुझे **शंकराचार्य जी के आश्रम में पाँच मास तक रहने का अवसर मिला**, जहाँ उनके पावन सान्निध्य में मैंने भारतीय अध्यात्म और साधना का सजीव अनुभव किया। यह कालखण्ड मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ सिद्ध हुआ, जिसने मुझे संगीत और साधना के गूढ़ रहस्यों को आत्मसात करने की दिशा प्रदान की।

संगीत के प्रति मेरा अनुराग प्रारंभ से ही रहा, और इसी पिपासा के कारण मैंने इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय से स्नातक (BPA) एवं परास्नातक (MPA) की नियमित शिक्षा पूर्ण की। किंतु मेरे लिए संगीत मात्र एक कला न होकर आत्मोन्नति एवं मानसिक संतुलन का साधन है। इसी संकल्पना के साथ मैंने हरिता संगीत अकादमी की स्थापना की, जिसका उद्देश्य भारतीय शास्त्रीय संगीत के मूल स्वरूप को संरक्षित रखना एवं उसे नूतन शिखरों तक पहुँचाना है। यहाँ संगीत साधकों को न केवल गायन-वादन का शिक्षण दिया जाता है, अपितु ध्वनि चिकित्सा (साउंड थेरेपी) तथा मानसिक शांति हेतु संगीत के सूक्ष्म प्रभावों पर भी मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है।

मैंने विभिन्न शिक्षण संस्थानों में अध्यापन किया है तथा अनेक प्रतिष्ठित संस्थानों से संबद्ध रहकर भारतीय संगीत के प्रसार में सक्रिय योगदान दिया है। मेरा यह सतत प्रयास रहा है कि भारतीय संगीत की गरिमा अक्षुण्ण बनी रहे तथा नवीन पीढ़ी इसे आत्मसात कर सके।

इस ग्रंथ के माध्यम से मैंने भारतीय और पाश्चात्य संगीत की तुलनात्मक समीक्षा प्रस्तुत करने का प्रयास किया है, जिससे संगीत-प्रेमी एवं शोधार्थी दोनों लाभान्वित हो सकें। यद्यपि यह मेरा प्रथम ग्रंथ है, तथापि यदि इसमें कोई त्रुटि रह गई हो, तो मैं सहृदय पाठकों से क्षमायाचना करता हूँ। आपके सुझाव एवं प्रतिक्रियाएँ मेरे लिए अत्यंत मूल्यवान होंगी।

- ब्रजेश चतुर्वेदी